नवाचारों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शैक्षिक विकास की ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन – 100

विषय : हिन्दी (कक्षा – X)

| कार्यालय |

संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राजस्थान)

Email Id : mission100shekhawati@gmail.com
Help Line :01562-250439

''हमारा प्रत्येक विद्यार्थी स्पष्ट बोले, सही पढ़े व शुद्ध लिखे''

गोविन्द सिंह डोटासरा

राज्यमंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन एवं देवस्थान विभाग

माननीय शिक्षा मंत्री की कलम से

सम्मानित शिक्षक साथियों,

हम सभी के लिए गौरव का विषय है कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आयाम छू रहा है। इसी परम्परा को अग्रसर रखते हुए विगत सत्रों की भाँति इस सत्र में शेखावाटी ''मिशन–100'' मुहिम का आगाज संयुक्त निदेशक परिक्षेत्र चूरू द्वारा किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी, कर्मठ विद्वान विषयाध्यापकों की लगन और मेहनत से तैयार विषय वस्तु, ब्ल्यू प्रिन्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन के मद्देनजर विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा रहा है।

मैं इन सभी विषयाध्यापकों की कर्मठ टीम को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होनें अपनी दिन–रात की अथक मेहनत, लगन एवं समर्पित कार्यशैली से इस सकारात्मक कार्य को अंजाम दिया है। **मेरा सभी संस्था प्रधानों से आग्रह है कि वे सभी विषयाध्यापकों से समन्वय कर इस परीक्षा उपयोगी सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाना सुनिश्चित करें। साथ ही शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि इस विषय वस्तु को ''मिशन–100'' के अनुरुप 100 प्रतिशत विद्यार्थियों तक पहुँचायें एवं तद्नुरुप तैयारी भी करवायें।**

आशा करता हूँ कि आपका प्रयास न केवल शेखावाटी क्षेत्र के लिए, बल्कि पूरे प्रदेश में विद्यार्थियों के लिए एक नवाचार होगा जो उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होगा। शिक्षा विभाग में आपका प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक रुप से मूल्यपरक शिक्षा हेतु वृद्धिकारक होगा, जो प्रदेश को देश में सर्वोपरि स्थान दिलाने में कारगर साबित होगा।

शुभकामनाओं सहित

गोविन्द सिंह डोटासरा

राज्यमंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन एवं देवस्थान विभाग

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,चूरू संभाग, चूरू के नेतृत्व में 'शेखावाटी मिशन – 100' के तहत माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा 2020 में शामिल होने वाले विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा उपयोगी विषय वस्तु एवं प्रश्न कोश तैयार किया जा रहा है।

बोर्ड परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी की अपेक्षा होती है इस दृष्टि से शेखावाटी मिशन–100 द्वारा तैयार की गई विषय वस्तु एवं प्रश्नकोश विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

प्रश्न कोश के निर्माण में जिन विषय विशेषज्ञ शिक्षकों ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है, निसंदेह विद्यार्थियों के सफल हो जाने पर उन्हें जो आंतरिक सुख और संतोष मिलेगा ये सुखद क्षण उनकी स्मृति के अविस्मरणीय पलों में सुरक्षित रहेंगे। प्रश्नकोश निर्माण में जिन भामाशाहों का योगदान रहा है उन्हें भी सकारात्मक पहल के लिए धन्यवाद।

सभी के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ...

हिमांशु गुप्ता IAS
निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर

शुभकामना संदेश

श्रीमान् संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, चूरू की ओर से शुभ कामना संदेश

संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, चूरू कार्यालय के लिए बेहद प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि शिक्षा विभाग चूरू संभाग में कार्यरत सभी विद्वान साथियों के सहयोग से चूरू संभाग ने पिछले बोर्ड परीक्षा परिणामों तथा इन्सपायर अवार्ड में उच्च पायदान पर स्थान प्राप्त किया है। विगत वर्षो की भांति इस बार भी **'शेखावाटी मिशन–100** को जारी रखते हुए इसमें विद्यार्थियों की रूचि के आधार पर छोटे–छोटे प्रश्नों की उत्तर सहित सरल एवं रूचिकर सामग्री अनुभवी विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा तैयार करवाते हुए एक नवीन नवाचार करने का प्रयास किया गया है।

शिक्षा विभाग में बोर्ड परीक्षा में जुटी पूरी टीम से मेरा निवेदन है कि, **शेखावाटी मिशन–100** में तैयार विषयवस्तु को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचातें हुए उसकी तैयारी करवाने का हर सम्भव प्रयास करें ताकि पूर्व की भांति इस बार भी संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि हो सके।

सुरेन्द्र सिंह गौड़
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू का एक निवेदन

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक उन्नति एवं बोर्ड परीक्षा उन्नयन हेतु शिक्षा एवं शिक्षण पद्वति में नवाचारों के प्रभावी प्रयोग एवं अपेक्षित परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की है। मंत्री महोदय का कहना है कि विद्यालय में ऐसी व्यवस्था एवं वातावरण तैयार होना चाहिए कि हमारा प्रत्येक विद्यार्थी स्पष्ट बोले, सही पढे व शुद्व लिखे।

उनका मानना है कि जिनको बोलना व लिखना आता है वे सफल इन्सान हैं। एक संस्था प्रधान व विषय अध्यापक यह दोनों कौशल अपने विद्यार्थियों में भाषा के ज्ञान प्रार्थना सभा, बाल सभा, उत्सवों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, भाषण, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं आदि के द्वारा उत्पन्न कर सकता है।

माननीय निदेशक महोदय ने भी अपने पत्र दिनांक 24.09.19 एवं 13.11.19 के द्वारा बोर्ड परीक्षा उन्नयन एवं गुणात्मक अभिवृद्वि हेतु प्रभावी निर्देशन एवं सम्बलन प्रदान किया है। इस क्रम में निदेशक महोदय ने निदेशालय स्तर से बोर्ड परीक्षा तैयारी हेतु "प्रयास" के रूप में बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण विषय वस्तु विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध करायी है। इसके साथ ही एक निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्री–बोर्ड परीक्षा के रूप में परीक्षा तैयारी का वातावरण तैयार करने के निर्देश जारी किये हैं।

पिछले शैक्षणिक सत्रों में शिक्षा विभाग द्वारा कई नवाचार किए गए जिनसे अभूतपूर्व परिणाम प्राप्त हुए हैं। सत्र 2017–18 में चूरू सम्भाग के तत्कालीन उप निदेशक डॉ. महेन्द्र चौधरी के निर्देशन में 'शेखावाटी मिशन–100' शुरू किया गया था जिसके परिणामस्वरूप 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम बहुत शानदार रहा। सत्र 2019–20 में चूरू सम्भाग का सीकर जिला 10वीं के परीक्षा परिणाम में प्रथम रहा, झुन्झुनूं द्वितीय एवं चूरू सातवें स्थान पर रहा। इसी प्रकार 12वीं विज्ञान में सीकर द्वितीय, झुन्झुनूं 5वें एवं चूरू 9वें स्थान पर रहा। आपके व वर्तमान संयुक्त निदेशक श्रीमान् सुरेन्द्र सिंह गौड़ के मार्गदर्शन व प्रेरणा से संयुक्त निदेशक कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग ने इस वर्ष भी नवाचार करते हुए बोर्ड परीक्षा 2020 हेतु विषय सामग्री तैयार करवाई है। प्रायः यह देखा गया है कि निबन्धात्मक एवं बड़े प्रश्न सामान्य विद्यार्थियों को याद करने में कठिनाई होती है तथा भूलने की सम्भावना रहती है। इसे ध्यान में रखते हुए "शेखावाटी मिशन–100" की अनुभवी विषय विशेषज्ञों की टीम ने ब्लूप्रिंट के आधार पर विषय वस्तु को छोटे–छोटे प्रश्नों में विभक्त कर उनके उत्तर सहित विषय सामग्री तैयार की हैं। छोटे–छोटे प्रश्नोत्तरों के रूप में तैयार यह विषय सामग्री इस बार भी बोर्ड परीक्षा 2020 के लिए उपयोगी एवं मददगार साबित होगी। अगले सत्र 2020–21 के प्रारम्भ होने के साथ ही इसे कक्षा कार्य के रूप में प्रत्येक विषय अध्यापक शुरू करे तो माननीय शिक्षा मंत्री महोदय एवं निदेशक महोदय की भावनाओं के अनुरूप शिक्षण पद्वति में गुणात्मक उन्नति के साथ अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं मे 10वीं एवं 12वीं तक के पाठ्यक्रम से ही सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः यह विषय सामग्री विद्यार्थियों का सामान्य ज्ञान बढाने में भी मददगार साबित होगी।

विद्यालय में नामांकन अभिवृद्धि, शिक्षण में गुणात्मक उन्नति एवं बोर्ड परीक्षा परिणाम को संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से बढाने के लिए अगले स़त्र के प्रारम्भ से ही इस नवाचार को शुरू करने हेतु कुछ विचार अनुभव की पाठशाला से सीखे हैं।

साथियों एक संस्था प्रधान तथा एक विषय अध्यापक होने के नाते हमारे जेहन में नवाचार के आइडिया सुबह की चाय की एक–एक घूँट के साथ पनपे, और हम उस स्वप्न को साकार करने में उसी वक्त जुट जाएं तो दुनिया के सबसे बड़े मन्दिर या मस्जिद हमारे शिक्षा (सरस्वती) के मन्दिर के हम पुजारी सब कुछ सम्भव बना सकते हैं। भगवान के मन्दिर में भगवान को पुजारी ही पूजवाता है, ठीक उसी प्रकार हम अध्यापकों को विद्या के मन्दिर को पूजवाना है। कुछ प्रमुख विचार मेरे चिन्तन में एक संस्था प्रधान/विषय अध्यापक होने की कल्पना के रूप में पनप रहे हैं, जिन्हें आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ:–

1. मैं संस्था प्रधान/विषय अध्यापक "शेखावाटी मिशन 100" द्वारा तैयार की गई विषय सामग्री को प्रार्थना सभा, बाल सभा तथा खाली कालांश में ग्रुप बनाकर क्विज प्रतियोगिता, होम प्रोजेक्ट आदि के रूप में याद करवाने का वातावरण तैयार कर बोर्ड परीक्षा की तैयारी सुनिश्चित करूँगा।
2. मैं भाषा (हिन्दी/अंग्रेजी या संस्कृत) का अध्यापक हूँ, इसलिए सत्र के प्रारम्भ में पहले दिन ही कक्षा कार्य की कॉपी में कक्षा स्तर के अनुरूप 50 से अधिक महत्वपूर्ण, विशेष, सामान्य से हटकर अर्थात् भारी शब्द अर्थ सहित लिखवाऊँगा जिससे मेरे विद्यार्थी की भाषागत दक्षता जैसे बोलना, पढना व लिखना प्रभावशाली एवं आकर्षक बने। सतत अभ्यास, नियमित परख, प्रोत्साहन से विद्यार्थी की भाषा दक्षता में उच्च स्तरीय क्षमता विकसित करूँगा।
3. मैं संस्था प्रधान/विषय अध्यापक यह नवाचार अगले सत्र प्रारम्भ से ही शिक्षण कार्य के दौरान प्रत्येक पाठ/विषय–वस्तु पूर्ण होते ही ऐसे छोटे–छोटे अति लघु/लघूत्तरात्मक प्रश्न उत्तर सहित कक्षा कार्य के रूप में तैयार करवाते हुए यह व्यवस्था बनाऊँगा कि मेरे अवकाश पर रहने या अन्य कार्य में लगा होने या खाली कालांश में उस पाठ्य सामग्री को कक्षा के ग्रुप (टीम ए व बी) के मध्य क्विज प्रतियोगिता कक्षा मॉनिटर के माध्यम से आयोजित हो। इससे विषय का रिवीजन होगा, खाली कालांश नहीं रहेगा, विद्यार्थियों में अनुशासन व खुली प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ शैक्षणिक वातावरण का निर्माण होगा।
4. मैं मेरे विद्यार्थी को देश, समाज से जुड़े नवीन घोषणाओं, घटनाओं आदि से अवगत करवाऊँगा तथा उनके प्रति लेखन, भाषण कला को विकसित करूँगा। आम आदमी के रोजमर्रा के जीवन से जुड़े टॉपिक जैसे सिंगल यूज प्लास्टिक–ना बाबा ना, स्वच्छ भारत मिशन, दहेज प्रथा, बाल विवाह, बालश्रम, कन्या भ्रूण हत्या, रेगिंग, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत, महिला अधिकार, कानून की सामान्य जानकारियाँ, सड़क सुरक्षा आदि का समुचित ज्ञान कराऊँगा। हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में इन मुद्दों पर प्रभावशाली शब्दों और विचारो से युक्त निबंध लेखन, वाद–विवाद, आशु भाषण आदि हेतु प्रेरित करूँगा। जिस दिन मैं अवकाश पर रहूँ या अन्य कार्यवश कक्षा अध्यापन नहीं करवा पाऊँ, उस दिन किसी एक विषय पर विद्यार्थियों से रेन्डमली निबंध लिखवाऊँगा और समय पर उसकी जाँच करके उचित निर्देशन प्रदान करूँगा।
5. संस्था प्रधान होने के नाते मैं अवकाश पर जाने वाले शिक्षकों से प्रार्थना पत्र के साथ ही प्रत्येक कक्षा हेतु सम्बन्धित विषय सामग्री देने हेतु निर्देशित करूँगा ताकि उक्त कालांश में विद्यार्थियों को कक्षा कार्य करवाया जाए, जैसे– पेपर लेना, चित्र बनाना, आरेख बनाना, डिबेट करना, अन्त्याक्षरी करवाना आदि। ये कार्य मॉनिटर के माध्यम से सम्पन्न करवाये जा सकते है।
6. मैं विज्ञान का अध्यापक हूँ अतः अपनी जेब में रखे पैन के साथ रखे पैन ड्राइव से सम्बन्धित विषय के विडियो/पीपीटी द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बनाऊँगा। विद्यालय विज्ञान प्रयोगशाला का भरपूर उपयोग करूँगा तथा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करूँगा।
7. मैं विद्यार्थियों को अपनी दैनिक डायरी लिखने हेतु प्रेरित करूँगा इससे उनमें नियमितता, अनुशासन की भावना तथा लिखने व बोलने की क्षमता उत्पन्न करने में सहायता मिलेगी, इससे हमारा प्रत्येक विद्यार्थी "स्पष्ट बोले, सही पढें व शुद्व लिखे" कथन भी सार्थक होगा।
8. मैं संस्था प्रधान होने के नाते विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों हेतु मोटिवेशनल विडियोज का कलेक्शन करके समय–समय पर दिखाऊँगा ताकि उनमें नयी ऊर्जा, लगन का संचार होता रहे। मैं संस्था प्रधान होने के नाते सभी सहशैक्षणिक गतिविधियों जैसे – विभिन्न जयन्तियों, राष्ट्रीय उत्सव, स्वच्छ भारत मिशन, भाषण, वाद–विवाद, प्रतियागिताएँ आदि रूचिपूर्वक आयोजित करवाऊँगा।
9. एक संस्था प्रधान होने के नाते मैं विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की रूपरेखा अपने जेहन में रखूँगा तथा उसे अमली जामा पहनाने के लिए सदैव प्रयासरत रहूँगा।

"शेखावाटी मिशन 100" टीम के विषय अध्यापको ने अल्प समय में विषय वस्तु को तैयार किया है। इसमें प्रश्नोत्तरों, लेखन, भाषा, टंकण जैसी त्रुटियां सम्भव है। सभी विषय अध्यापको से निवेदन है कि वे अपने स्तर पर ठीक करते हुए विद्यार्थियों तक पहुँचाने का कष्ट करेंगे तथा संशोधन हेतु "शेखावाटी मिशन 100" टीम को आवश्यक फीड बैक प्रदान करेंगे। आपके प्रयास से प्रदेश में परीक्षा परिणाम संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से बढे।

मैं सयुक्त निदेशक कार्यालय चूरू की ओर से प्रयास संस्थान सीकर का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके आर्थिक सहयोग से इस सम्पूर्ण सामग्री का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

शुभकामनाओं सहित।

ओमप्रकाश फगेड़िया
अति.जि.शि.अ.एवं शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी
कार्यालय, संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू सम्भाग, चूरू

शेखावाटी मिशन – 100

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सत्र–2019–20
माध्यमिक परीक्षा – 2020
विषय –हिन्दी

सर्वश्रेष्ठ संकलन, सर्वश्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने हेतु।

संयोजक –श्रीमती सुमन पूनियाँ
रा.उ.मा.वि. चुबकिया ताल, राजगढ (चुरू)
मो. 9462360281

सह–संयोजक – श्री जगदीश प्रसाद
रा.मा.वि. आकवा (सीकर)
मो. 9610002616

सदस्य – श्री सत्यनारायण शर्मा
रा.उ.मा.वि. बुडाना, (झुंझुनू)

सदस्य – राकेश कुमार
रा.उ.मा.वि सात्यूँ (चूरू)

सदस्य – श्री अशोक कुमार
रा.उ.मा.वि. रूल्याणामाली (सीकर)

सदस्य – अभिनव सरोवा
रा.उ.मा.वि. पिथूसर (झुंझुनू)

कार्यालयः– संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरु संभाग, चूरु (राजस्थान)

कार्यालय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन–100

विषय–हिंदी कक्षा–10

संयोजक–श्रीमती सुमन पूनियाँ (प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. चुबकिया ताल, राजगढ़, चूरू)
सदस्य– श्री सत्यनारायण शर्मा (प्राध्यापक, रा.उ.मा.वि.बुडाना झुंझुनुं)
सदस्य– श्री अभिनव सरोवा (प्राध्यापक, रा.उ.मा.वि. पिथूसर, झुंझुनुं)
सदस्य– श्री जगदीश प्रसाद (व.अ., रा.मा.वि. आकवा सीकर)
सदस्य– श्री अशोक कुमार (व.अ. रा.उ.मा.वि. रुल्याणामाली, सीकर)

संदेश

इस सत्र में बोर्ड परीक्षाएं फरवरी माह में आयोजित होने वाली हैं। बोर्ड परीक्षा परिणाम विद्यार्थी के भविष्य की दशा और दिशा निर्धारित करता है। इसलिए विद्यार्थी व अभिभावक का तनावग्रस्त होना स्वाभाविक है। प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक लाने हेतु अपनी तरफ से वर्षभर कक्षा शिक्षण, गृहकार्य व नोट्स तैयार कर तैयारी करता है। परंतु परीक्षा से पूर्व का समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए एक रणनीति बनाकर तैयारी करना आवश्यक होता है। विद्यार्थी ने वर्षभर में क्या और कितना पढ़ा यह तो महत्त्वपूर्ण होता ही है किन्तु इससे ज्यादा महत्त्व रखता है कि परीक्षा कक्ष में विद्यार्थी ने अपने आत्मविश्वास को बनाये रखकर परीक्षा दी हो। परीक्षा के फोबिया से दूर रहते हुए विद्यार्थी तैयारी कर सकें इस हेतु शेखावाटी मिशन–100 हिंदी की टीम द्वारा यह पाठ्य सामग्री तैयार की गई है। हमें विश्वास है कि निश्चित रूप से इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर आपको सफलता मिलेगी। बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक व गुणात्मक सुधार के लिए यह एक प्रयास है।

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में परीक्षा की तैयारी हेतु उपयोगी जानकारी व महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर प्रस्तुत किए गए हैं। हमारा सुझाव है कि आप इस पाठ्य सामग्री को मन लगाकर पढ़ें और अपनी परीक्षा की रणनीति तैयार करें।

फिलहाल सर्दी का मौसम है किन्तु स्वाध्याय के लिए यह अनुकूल समय है। आप इसका सदुपयोग करें। देखने में आता है कि अधिकतर विद्यार्थी हिंदी विषय के प्रति गंभीर नहीं होते। अतः अन्य विषयों में विशेष योग्यता अर्जित करने के बावजूद भी हिंदी में अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अतः सरल विषय मानकर हिंदी विषय की उपेक्षा न करें।

"आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ।"

कार्यालय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) चूरू संभाग चूरू

विषय– हिन्दी कक्षा 10

क्रं. सं.	ईकाई	अंकभार	प्रश्नों का प्रकार एंव उनके अंक				
			अति. लघुरात्मक	लघुरात्मक	लघु. ।।	निबान्धात्मक	कुल
1	अपठित बोध पद्य	4	2(2)	2(1)	-	_	4(3)
2	गद्य	4	2(2)	2(1)	_	-	4(3)
3	रचना	12	_	3(2)	-	8(1निबंध)	12(2)
						4(1पत्र)	
4	व्यावहारिक व्याकरण	12	1(1)	8(4)	3(1)	–	12(6)
5	पाठ्य पुस्तक	48	6(4)	12(6)	6(2)	12(2)	48(16)
	क्षितिज	-	-	-	-	12(2व्या.)	
		80	11(9)	24(12)	9(3)	24(4)	

खंड–02

प्रश्न संख्या–07 (निबंध) अंकभार–08 (कौशल व मौलिकता आधारित)
– चार निबंधों में से एक करना है।
– निबंध लिखने के लिए सहायक बिंदु पहले से निर्धारित होंगे।

महत्त्वपूर्ण निबंध

1. प्लास्टिक मुक्त भारत : स्वच्छ भारत
2. बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ
3. सफल लोकतंत्र और निर्वाचन प्रणाली
4. चंद्रयान–2 : चाँद की ओर भारत के बढ़ते कदम

प्रश्न संख्या–08 (पत्र लेखन) अंकभार–04 (अवबोध व ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति आधारित)

– विकल्प सहित : कार्यालयी अथवा व्यावसायिक पत्र
– पत्राचार में दो महत्त्वपूर्ण व्यक्ति
 1. प्रेषक– जो पत्र भेजता है।
 2. प्रेषिति– जिसे पत्र भेजा जाता है।

कार्यालयी पत्र

– कार्यालयी पत्र दो प्रारूपों मे लिखा जाता है–
 1. कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को लिखे जाने वाले पत्र
 2. व्यक्ति द्वारा किसी कार्यालय को लिखे जाने वाले पत्र

1. कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को लिखे जाने वाले पत्र का प्रारूप–

राजस्थान/भारत सरकार
कार्यालय, प्रेषक अधिकारी के पद का नाम,
कार्यालय का नाम एवं पता

पत्र क्रमांक   दिनांक

प्रेषिति के पद का नाम,
कार्यालय का नाम एवं पता।

विषय : .... हेतु।

महोदय,
 उपर्युक्त विषय अंतर्गत निवेदन/लेख है कि...
....।
 अपेक्षा है/आशा है ....
...........।
 सादर।
संलग्न : (यदि लगाए गए हों तो)

भवदीय
हस्ताक्षर–क ख ग
(प्रेषक का पद नाम)

पत्र क्रमांक   दिनांक
प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु –
 1 जिसको प्रतिलिपि भेजनी है उसका पद का नाम, कार्यालय का नाम एवं पता
 2 रक्षित पत्रावली।

हस्ताक्षर कखग
पद नाम (कोष्ठक में)

प्रश्न–8. अधिशासी अभियंता, राजस्थान राज्य विद्युत निगम, झुंझुनूं की ओर से एक पत्र पुलिस अधीक्षक झुंझुनूं को लिखिए जिसमें किसान रैली के दौरान विद्युत लाइनों की सुरक्षा के बारे में अवगत करवाया गया हो।

राजस्थान सरकार
कार्यालय, अधिशासी अभियन्ता,
राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड, झुन्झुनूं

मिशन शिक्षा 100

प.क्र..रा.रा.वि.म. / 21 / 13 / 2019 08 नवंबर, 2019

पुलिस अधीक्षक

झुंझुनूं जिला

झुंझुनूं।

विषय : 28 नवंबर, 2019 को आयोजित किसान रैली के दौरान विद्युत लाइनों की सुरक्षा करने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत हम आपका ध्यान 8 अक्टुबर, 2019 को कलेक्टर के कार्यालय में हुई बैठक की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं जिसमें 28 नवंबर, 2019 को आयोजित किसान रैली से सुरक्षा संबंधी सम्भावित खतरों पर चर्चा की गई थी। उक्त बैठक में किसान रैली के दौरान किसानों का रोष मुखर हो सकता है तथा वे ट्रांसफॉर्मर जलाने आदि की कार्यवाही पर भी उतर सकते है। इस संदर्भ में हमारी ओर से निवेदन है कि इस रैली के दिन आपके नेतृत्व में पुलिस कर्मियों द्वारा कड़ी सुरक्षा हो।

बिजली की कमी से उपजे किसान आक्रोश की इस विषम परिस्थिति में पुलिस बल का सहयोग देने में आपका विशेष सहयोग रहेगा। इसी अपेक्षा के साथ।

संलग्न : 1. किसान सभा के अध्यक्ष के रैली के संबंध में पत्र की छायाप्रति।

भवदीय

क ख ग

(अधिशासी, अभियन्ता)

प.क्र..रा.रा.वि.म. / 21 / 13 / 2019 08 नवंबर, 2019

प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु–

1. उप अधीक्षक, पुलिस खेतड़ीवृत।
2. थाना प्रभारी पुलिस थाना नवलगढ़।
3. रक्षित पत्रावली।

क ख ग

अधिशासी अभियन्ता

प्रश्न–जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा विभाग झुंझुनूं की ओर से एक कार्यालयी पत्र प्रधानाचार्य, राज. आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, बुडाना झुंझुनूं को लिखिए जिसमें कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों के अध्यापन के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित किया गया हो।

राजस्थान सरकार

कार्यालय, जिला शिक्षा अधिकारी

माध्यमिक शिक्षा विभाग झुंझुनूं

प.क्र–जि.शि.अ.मा.शि.झुं / 21 / 13 / 2019 08 नवंबर, 2019

प्रधानाचार्य

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय

बुडाना, झुंझुनूं।

विषय : कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत लेख है कि आपके विद्यालय की कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से अच्छा रहे इस हेतु आप कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों के लिए गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों में अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित करें। आवश्यकता होने पर सेवानिवृत शिक्षकों अथवा वरिष्ठ प्राध्यापकों की सेवाएँ भी ली जा सकती हैं।

उक्त विषयों में अर्द्ध वार्षिक परीक्षा परिणाम के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों की सूची तथा आदेश अनुपालना की सूचना इस कार्यालय को भिजवायें।

भवदीय

मिशन ब्रेकथ्रू 100

क ख ग
जिला शिक्षा अधिकारी

2. व्यक्ति द्वारा कार्यालय को लिखे जाने वाले पत्र (आवेदन–पत्र, प्रार्थना–पत्र, शिकायती–पत्र) का प्रारूप

प्रेषक का नाम

पता।

दिनांक

(सेवा में,/प्रतिष्ठा में,)

प्रेषिति (पानेवाला) के पद का नाम

कार्यालय का नाम, पता

विषय : ....
....।

महोदय,

उपर्युक्त विषय अंतर्गत निवेदन है कि...
....।

अपेक्षा है/आशा है ....
...........।

साादर।

संलग्न :– ....

भवदीय/प्रार्थी

हस्ताक्षर

नाम (कोष्ठक में)

पुनश्च– ....।

हस्ताक्षर

नाम (कोष्ठक में)

प्रश्न–आपका नाम रजनीश है आप वार्ड नंबर तीन झुंझुनूं के रहने वाले हैं। बार–बार बिजली कटौती की समस्याको लेकर अभियंता विद्युत निगम झुंझुनूं को एक पत्र लिखिए।

रजनीश
वार्ड नं.–03 झुंझुनूं
11 दिसंबर, 2019

सेवा में,
श्रीमान अभियंता
विद्युत निगम, झुंझुनूं।

विषय : बार–बार बिजली कटौती न करने हेतु।
महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत निवेदन है कि हमारे वार्ड नंबर तीन में बार–बार बिजली कटौती हो रही है। अघोषित बिजली कटौती के कारण बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले छात्र–छात्राओं की पढ़ाई बाधित हो रही है।

अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि बोर्ड परीक्षा को ध्यान में रखते हुए बिजली कटौती कम करने की कृपा करें।

सादर।

प्रार्थी

मिशन गोरखधारी 100

कखग
(रजनीश)

पुनश्चः प्रातः चार बजे से आठ बजे तक बिजली कटौती न करने की कृपा करें।
रजनीश

खंड–03

प्रश्न संख्या–09 (विशेषण, क्रिया) अंकभार–02 (लघूत्तरात्मक 1) ज्ञानात्मक
विशेषण

प्रश्न विशेषण किसे कहते हैं और विशेषण के कितने भेत होते हैं?
उत्तर परिभाषा–संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले पद विशेषण कहलाते हैं।
उदाहरण – पवित्र पुस्तक (विशेषण)
विशेष्य – विशेषण जिसकी विशेषता बताता है वह विशेष्य है। (उपर्युक्त वाक्य में 'पुस्तक' विशेष्य है।)
विशेषण के चार भेद हैं–
1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण (संकेतवाचक विशेषण)

प्रश्न गुणवाचक विशेषण को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
उत्तर विशेष्य के गुण दोष रंग, अवस्था, स्वाद, आदि का बोध कराने वाले विशेषण गुण वाचक विशेषण कहलाते हैं।
1. गुण – अच्छा, ईमानदार, दयालु 2. दोष – बुरा, झूठा, क्रोधी, चोर
3. रंग – लाल, पीला, नीला 4. स्वाद – खट्टा , मीठा, कड़वा
5. अवस्था – जवान, बच्चा, बूढ़ा, अधेड़ 6. आकृति – गोल, लम्बा, छोटा, तिकोना
8. दिशा–उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम
नोट–व्यक्तिवाचक संज्ञा से बने विशेषण व्यक्ति वाचक विशेषण कहलाते है, जैसे – जयपुरी, बनारसी, जोधपुरी
गुणवाचक विशेषण की अवस्थाएं – इसकी तीन अवस्थाएं होती हैं–
1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था
1. मूलावस्था –विशेषण की तुलना रहित स्थिति मूलावस्था कहलाती है।
जैसे – अच्छा बालक, मेधावी बालिका, तेज धार
2. उतरावस्था – विशेषण की दो व्यक्ति, वस्तुओ में तुलनात्मक स्थिति उतरावस्था कहलाती है।
जैसे –मोहन सोहन से अच्छा है।
इस चाकू की धार तलवार से तेज है।
3. उतमावस्था –जंहा विशेषण की दो या दो से अधिक वस्तु व्यक्ति से तुलना करके एक को श्रेष्ठ बताया जाए वहाँ विशेषण की उत्तमावस्था होती है।
जैसे–स्वेता कक्षा में सबसे अच्छी लड़की है।
एक तुलनात्मक अध्ययन

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अधुना	अधुनातर	आधुनिकतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
गहरा	अधिक गहरा	सबसे गहरा

प्रश्न संख्यावाचक विशेषण को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
उत्तर विशेष्य की संख्या का बोध कराने वाले विशेषण संख्या वाचक विशेषण कहलाते हैं।
इसके दो भेद है–
1. निश्चित संख्यावाची विशेषण 2. अनिश्चित संख्यावाची विशेषण
1. निश्चित संख्यावाची विशेषण : – इनसे निश्चित संख्या का बोध होता है।
– निश्चित संख्यावाची के उपभेद–
1. क्रमवाची – पहला, दूसरा, तीसरा 2. गणनावाची – एक , दो हजार
3. समुदायकवाचक – दोनों चारों 4. प्रत्येक बोधक – एक–एक , दो–दो, चार–चार, हर, प्रत्येक
5. आवृती बोधक– दो बार, तीन बार 6. समुच्चयवाचक–दर्जन, जोड़ा,
7. अपूर्णांक बोधक–सवा, पोन, आधा
2. अनिश्चित संख्यावाची विशेषण –अनिश्चित संख्या का बोध– कुछ, कम, ज्यादा, थोडा, पर्याप्त, सभी, बहुत।
जैसे – उसके पास काफी पुस्तकें हैं।
– कुछ लोग सभा में उपस्थित थे।

मिशन शिक्षादानी 100

– कुछ लोग, सभी सैनिक, पर्याप्त मजदूर,

प्रश्न परिमाणवाचक विशेषण को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर विशेष्य के परिमाण(नाप–तोल) का बोध कराने वाले विशेषण परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
परिमाण वाची के दो भेद है–
1. निश्चित परिमाणवाची विशेषण 2. अनिश्चित परिमाणवाची विशेषण
1. निश्चित परिमाणवाची
जैसे – 10 लीटर दूध,
– 1 किलो चीनी।
2. अनिश्चित परिमाणवाची विशेषण :
जैसे– कुछ दूध, कम पानी, ज्यादा, पर्याप्त चीनी।

प्रश्न सार्वनामिक विशेषण को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वे सर्वनाम जो विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।
ये सर्वनाम संज्ञा से पहले प्रयुक्त होकर उसकी विशेषता बताते हैं।
– उस बच्चे को बचाओ
– यह पंखा चल रहा है।
– कौन लड़का आया
– जो व्यक्ति करेगा सो भरेगा
– कोई जानवर बैठा है

क्रिया

प्रश्न क्रिया किसे कहते हैं और कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं?

उत्तर जिस पद से किसी कार्य के विधान (होने) का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं।
–सामान्तः क्रिया के अंत में 'ना' रहता है।
जैसे– पढ़ना, चलना, करना, गाना
क्रिया के भेद –
– कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–
1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया

प्रश्न अकर्मक क्रिया को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अकर्मक क्रिया :
– जहाँ कर्ता के द्वारा किये गये कार्य का प्रभाव जब कर्ता तक ही सीमित हो वह अकर्मक क्रिया होती है।
– अकर्मक क्रिया का कोई कर्म नहीं होता है।
जैसे – पक्षी उड़ा, वह चला– रमेश दौड़ा,
– मैं रोज टहलता हूँ। – पेड़ खड़ा है।
– बच्चा जोर से रोया। – छोटे बच्चे बात–बात पर रोते हैं।
– जंगल में हरिण दौड़ रहे हैं। – रमेश रोज पढ़ने जाता है।
– बच्चा खिलखिलाकर हँसा। – पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।
– पशु मैदान में चर रहे हैं। – मजदूर छाया में सुस्ता रहा है।
– जंगल में हिरण दौड़ रहे हैं। – आलसी बच्चे देर तक सोते रहते हैं।
– मोर नाच रहे हैं। – कुत्ते भौंक रहे हैं।
– कैलास छत से गिर गया।– हरीश बस पर चढ़ गया।

प्रश्न सकर्मक क्रिया को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सकर्मक क्रिया :–
– जब क्रिया का प्रभाव कर्ता तक सीमित न रहकर कर्म तक पहुँच जाये वह सकर्मक क्रिया होती है।
– सकर्मक क्रिया कर्म सहित होती है।
जैसे – राम ने साँप मारा
– पशु मैदान में घास चर रहे हैं।
– मैंने केले खरीदे।
– उसने पत्र लिखा।
सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है–
1. एककर्मक क्रिया 2. द्विकर्मक क्रिया
1. एककर्मक क्रिया
– जहां क्रिया का एक कर्म हो वह क्रिया एककर्मक कहलाती है।
उदाहरण – मोहन फुटबॉल खेलता है।
– चिड़िया दाना चुग रही है।

– सतीश ने केले खरीदे।
– बच्चे मैदान में पतंग उड़ा रहे हैं।
– मनीषा ने कार खरीदी।

2. द्विकर्मक क्रिया

– जहाँ क्रिया के दो कर्म हों वह द्विकर्मक क्रिया कहलाती है।

उदाहरण – राम ने मोहन को पेन दिया ।
– मैंने पिताजी को पत्र लिखा।
– अध्यापक छात्रों को हिंदी पढ़ा रहा है।
– माता ने बालक को वस्त्र पहनाए।
– रेखा ने मुझे चित्र दिखाया।
– तुम मुझे कोई कहानी सुनाओ।

प्रश्न संख्या–10 (कारक काल और वाच्य) अंक भार–03(लघूत्तरात्मक 2) ज्ञानात्मक

प्रश्न– 'मोहन के द्वारा पत्र लिखा गया। वाक्य में निहित कारक, वाच्य और काल लिखिए।

उत्तर– कारक – कर्ता
काल – भूतकाल
वाच्य – कर्तृवाच्य

कारक

– संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध स्थापित करने वाले तत्त्व को कारक कहते हैं।

– कारकों की संख्या आठ होती है।

क्र.सं.	कारक	विभक्ति	परिभाषा
1.	कर्ता	0,(मूल) ने(तिर्यक)	क्रिया को करने वाला।
2.	कर्म	0,(मूल) को(तिर्यक)	जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े।
3.	करण	से/के द्वारा	क्रिया को करने का साधन।
4.	संप्रदान	के लिए	जिसके लिए क्रिया की जाये।
5.	अपादान	से (अलग होना)	संज्ञा से अलग होना
6.	संबंध	का, के, की	संज्ञा या सर्वनाम का अन्य पदों से संबंध
7.	अधिकरण	में, पर	क्रिया का आधार
8.	संबोधन	हे, अरे, सुनते हो	संज्ञा को पुकारना

उदाहरण–

राम ने पुस्तक पढ़ी।	(कर्ता कारक)	मुझे हिंदी पढ़नी है।	(कर्ता कारक)
मैं जयपुर जाऊँगा।	(कर्ता कारक)	यह संस्कृत की पुस्तक है।	(कर्ता कारक)
श्याम पुस्तक पढ़ता है।	(कर्म कारक)	प्रधानाध्यापक ने शर्मा जी को कार्यभार सोंपा।	(कर्मकारक)
रमेश जयपुर जाता है।	(कर्म कारक)	हाथ से चित्र बनाया।	(करण कारक)
चाकू से सब्जी काटी।	(करण कारक)	तार द्वारा सूचित किया।	(करण कारक)
आँखों देखा हाल सुनाया।	(करण कारक)	आलोक माँ के लिए दवा लाया।	(संप्रदान)
वह नौकरी के लिए भटक रहा है।	(संप्रदान)	पेड़ से पत्ता गिरा।	(अपादान)
हरफूल छत से कूदा।	(अपादान)	मैं स्टेशन से घर गया।	(अपादान)
आँखों से आँसू निकले।	(अपादान)	राम श्याम से बहादुर है।	(अपादान)
उसकी बहन मुझसे लजाती है।	(अपादान)	खरगोश बाघ से डरता है	(अपादान)
अजय की पुस्तक गुम हो गई।	(संबंध)	तुम्हारा चश्मा यहाँ रखा है।	(संबंध)
अपना कार्य स्वयं करें।	(संबंध)	बंदर पेड़ पर बैठा है।	(अधिकरण)
मैं दो मिनट में आया।	(अधिकरण)	घर के भीतर क्यों छिपे हो।	(अधिकरण)
जख्म पर दवा लगाओ।	(अधिकरण)	पांडवों में युद्धिष्ठिर बड़ा था।	(अधिकरण)
हे राम! रक्षा करो।	(संबोधन)	मोहन! जल्दी कर।	(संबोधन)
सज्जनो और देवियो, आपका स्वागत है।	(संबोधन)	भाई साहब! बात सुनते जाईये।	(संबोधन)

वाच्य

– क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि क्रिया द्वारा किये गए कार्य (विधान) का विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है उसे वाच्य कहते हैं।

– वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–1 कर्तृ वाच्य 2. कर्म वाच्य 3. भाव वाच्य

1. कर्तृवाच्य की पहचान (वाक्य में)
 कर्त्ता + ने/0 + क्रिया (सकर्मक/अकर्मक)
2. कर्म वाच्य की पहचान (वाक्य में)
 कर्त्ता/0 + से/के द्वारा + क्रिया (सकर्मक)+ गया/जा

3. भाव वाच्य की पहचान (वाक्य में)
कर्त्ता / 0 + से / के द्वारा + क्रिया (अकर्मक)+ गया / जा

(1) कर्तृवाच्य

– जब लड़का दूध पीता है। वाक्य में क्रिया के द्वारा किये कार्य का विधान कर्ता के अनुसार हो उसे ही कर्तृवाच्य कहते हैं।

– कर्तृ वाच्य में अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग हो सकता है।

जैसे–रवि ने पुस्तक पढ़ी। आरती साईकिल चलाती है।
अभिषेक ने कहानी लिखी। माँ बच्चों को प्यार करेगी।
क्या दीप्ति मिजोरम जायेगी? यह चित्र गुंजन ने बनाया।
. मैंने पत्र लिखा।

(2) कर्मवाच्य

जब वाक्य में क्रिया के द्वारा किये कार्य का विधान कर्म के अनुसार हो उसे ही कर्म वाच्य कहते हैं।
इसमें केवल सकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है। ऐसे वाक्यों में कर्ता करण कारक में होता है,
जैसे– अध्यापक के द्वारा समाचार पत्र पढा जाता है।

– सीता से पुस्तक नहीं पढ़ी गई। – पतंग उड़ रही है। – मैच चल रहा है।
– अध्ययन हो रहा है – मिठाई बन रही है। – पत्र भेजा गया।
– किताब फट गई। – शीशी टूट गई। – दूध गिर गया।
– डाकुओं का पता लगाया जा रहा है। – रुपये खर्च किए जा रहे हैं।
– अब अधिक दूध नहीं पिया जाता। – अपराधी को कल पेश किया जाए।

(3) भाववाच्य

जब वाक्य में क्रिया के द्वारा किये कार्य का विधान कर्म के अनुसार हो उसे ही कर्म वाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में केवल अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है। ऐसे वाक्यों में कर्ता करण कारक में होता है। भाव वाच्य में क्रिया सदैव एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष में होती है।

यथा

– अब मुझसे सहा नहीं जाता। – बालक के द्वारा सोया जाता है।
– उसके द्वारा हँसा जाता है। – अब चला जाए।
– चलो ऊपर सोया जाये। – बच्चों के द्वारा यहाँ सोया जाता है।
– उनसे अब चला नहीं जाता। – मुझसे बैठा नहीं जाता।

काल

– काल तीन होते हैं–
1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्य काल

1. वर्तमान काल
– है, ता है, ती है, ते हैं, रहा है, रही है, चुका है, चुकी है, से रहा है, से रही है।

2. भूतकाल
– ता था, ती थी, था, रहा था, रही थी, चुका था, चुकी थी, से रहा था, से रही थी।

3. भविष्य काल
– गा, गे गी, रहा होगा, रही होगी, रहे होंगे, चुके होंगे, चुकी होंगी, से रहा होगा, से रही होगी।

प्रश्न संख्या–11 (समास)अंक भार–03 (लघूत्तरात्मक 1) ज्ञानात्मक

समास

प्रश्न–समास किसे कहते हैं व इसके कितने भेद होते हैं?

उत्तर –समास का शाब्दिक अर्थ है–संक्षिप्त रूप।

परिभाषा

– परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों और विभक्तियों (कारक चिह्न) का लोप कर बनाये जाने वाले यौगिक शब्दों की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

– दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
जैसे– रसोई घर, माता–पिता, यथाशक्ति।

समस्त पद

– समास की प्रक्रिया द्वारा बने शब्दों को समस्त पद कहते हैं।
– समस्त पद में पहला पद पूर्व पद और दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है।

समास विग्रह

मिशन शिक्षा 100

– समास युक्त पदों को उनकी विभक्ति सहित पृथक–पृथक करने की रीति को विग्रह कहते हैं।

जैसे– देशभक्ति (देश के लिए भक्ति)

समास के भेद

– समास के 6 भेद होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास – प्रथम पद प्रधान
2. तत्पुरुष समास – दूसरा पद प्रधान
3. कर्मधारय –दूसरा पद प्रधान
4. द्विगु –दूसरा पद प्रधान
5. द्वंद्व समास – दोनों पद प्रधान
6. बहुव्रीहि समास – दोनों पदों से भिन्न अन्य पद की प्रधानता।

1. अव्ययीभाव समास

प्रश्न अव्ययीभाव समास को उदाहरण सहित समझाइए?

उत्तर अव्ययीभाव का अर्थ है–जो अव्यय का भाव दे।

परिभाषा

वे समस्त पद जो अव्यय का भाव दें उन्हें अव्ययीभाव समास कहते हैं। ये समस्त पद अव्यय का भाव देते हैं। अव्यय पदों पर लिंग, वचन, काल का प्रभाव नहीं पड़ता है।

– इस समास के पद सदैव क्रिया विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।

– अव्ययीभाव समास में प्रथम पद की प्रधानता होती हैं।

– उपसर्ग युक्त पद इस समास में सम्मिलित होते हैं।

उदाहरण

समस्त पद		समास विग्रह
प्रत्यक्ष	–	अक्षि (आँख) के प्रति (आगे)
आजीवन	–	जीवन भर
बेचैन	–	बिना चैन के
नासमझ	–	बिना समझ के
सप्रसंग	–	प्रसंग सहित
नियंत्रण	–	ठीक तरह से यंत्रण
प्रतिदिन	–	प्रत्येक दिन
यथा सम्भव	–	जितना सम्भव हो

नोट–

– शब्द की आवृत्ति होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है–

एक–एक – एक के बाद एक

रातों–रात– रात ही रात में

– ध्वनि का दोहरा रूप आने पर भी अव्ययीभाव समास होता है–

खट–खट– पुनः पुनः खट की आवाज

धड़ा–धड़ – धड़ के बाद पुनः धड़ की आवाज

– जहाँ शब्द के अंत में भर पर्यंत, पूर्वक, प्रति आदि शब्दांश हों वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है–

दिन भर – पूरे दिन

जीवन पर्यन्त – सम्पूर्ण जीवन

प्रश्न–'नियंत्रण' पद में कौनसा समास है? परिभाषा सहित लिखिए।

उत्तर– नियंत्रण– अव्ययी भाव समास

विग्रह– नि (ठीक) तरह से यंत्रण।

परिभाषा–वे समस्त पद जो अव्यय का भाव दें उन्हें अव्ययीभाव समास कहते हैं। ये समस्त पद अव्यय का भाव देते हैं।

2. तत्पुरुष समास

प्रश्न–तत्पुरुष समास को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर–तत्पुरूष समास :

जहाँ कारक की छः विभक्तियों में से किसी एक विभक्ति (कर्ता और संबोधन को छोड़कर) का लोप हो उसे तत्पुरुष समास कहते है।

– इसमें दूसरा पद प्रधान होता हैं अर्थात् पूरे पद का लिंग वचन दूसरे पद के अनुसार होता है।

– कर्म तत्पुरूष ('को' का लोप)

वनगमन	–	वन को गमन
चिड़ीमार	–	चिड़ी को मारने वाला
कृष्णार्पण	–	कृष्ण को अर्पण

मिशन कोरबोर्ड 100

– करण तत्पुरूष ('से/ के द्वारा' का लोप)
रेखांकित – रेखा के द्वारा अंकित
हस्तलिखित – हाथ से लिखित
मनगढंत – मन से गढ़ी हुई
रोगपीड़ित – रोग से पीड़ित
– सम्प्रदान तत्पुरूष ('के लिए' को लोप)
हवनसामग्री – हवन के लिए सामग्री
बालमृत – बालाओं के लिए अमृत
देशभक्ति – देश के लिए भक्ति
– अपादान तत्पुरूष ('से अलग' का लोप)
रोग मुक्त – रोग से मुक्त
धर्मभ्रष्ट – धर्म से भ्रष्ट
ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
– संबंध तत्पुरूष ('का, के, की' का लोप)
राजरानी – राजा की रानी
जलधारा – जल की धारा
सूर्योदय – सूर्य का उदय
– अधिकरण तत्पुरुष (में, पर का लोप)
सिरदर्द – सिर में दर्द
जलमग्न – जल में मग्न
आपबीती – आप पर बीती

प्रश्न–'देश भक्ति' समस्त पद में कौनसा समास है? इसका विग्रह करते हुए परिभाषा लिखिए।
उत्तर–देश भक्ति – तत्पुरुष समास
विग्रह – देश के लिए भक्ति

परिभाषा–जहाँ कारक की छः विभक्तियों में से किसी एक विभक्ति (कर्ता और संबोधन को छोड़कर) का लोप हो उसे तत्पुरुष समास कहते है। इसमें दूसरा पद प्रधान होता हैं।

तत्पुरुष समास के विशेष उदाहरण
दहीबड़ा – दही में डुबा हुआ बड़ा
बैलगाड़ी – बैल के द्वारा खींचे जाने वाली गाड़ी
पवनचक्की – पवन से चलने वाली चक्की
जलयान – जल में / पर चलने वाला यान
अकारण – न कारण
असम्भव – न सम्भव
अनाचार – न आचार
अलग – न लगा हुआ
असभ्य – न सभ्य

3. कर्मधारय समास
प्रश्न–कर्मधारय समास को उदाहरण सहित समझाइये।
उत्तर–परिभाषा

जिस समास में दोनों पदों के बीच विशेषण विशेष्य संबंध हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
विशेषण+विशेष्य
– इसमें दूसरा पद प्रधान होता है।

	समस्त पद		विग्रह
उदा.	नीलकमल	–	नीला है जो कमल
	महात्मा	–	महान् है जो आत्मा
	खुशबू	–	खुश (अच्छी) है जो बू (गंध)
	शुभागमन	–	शुभ है जो आगमन
	स्वच्छजल	–	स्वच्छ है जो जल
	उड़नतस्तरी	–	उड़ने वाली है जो तस्तरी
	विशेषण+विशेषण		
	कालास्याही	–	काली है जो स्याही
	कुमार श्रमणा	–	कुमारी है जो शर्मीली
	शीतोष्ण	–	शीत है जो उष्ण

प्रश्न–'नीलकमल' पद में कौनसा समास है? परिभाषा सहित समझाइये।

उत्तर–नीलकमल–कर्मधार्य समास

विग्रह–नीला है जो कमल।

परिभाषा– जिस समास में दोनों पदों का विशेषण विशेष्य संबंध हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

– इसमें दूसरा पद प्रधान होता है।

कर्मधारय समास के विशेष उदाहरण

– उपमेय उपमान का संबंध होने पर भी कर्मधारय समान होता है–

उदाहरण	कुसुम कोमल	–	कुसुम के समान कोमल
	राजीव लोचन	–	(राजीव) कमल के समान लोचन
	देहलता	–	देह रूपी लता
	संसार सागर	–	संसार रूपी सागर
	चरण कमल	–	कमल रूपी चारण
	स्त्री रत्न	–	रत्न रूपी स्त्री

4. द्विगु समास

प्रश्न–द्विगु समास किसे कहते हैं? उदारण सहित समझाइये।

उत्तर– जिस समास के दोनों पदों में विशेषण विशेष्य संबंध हो और पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है।

– पूरा समास समूह का बोध कराता है।

– इस समास के विग्रह में समूह या समाहार शब्द जोड़े जाते हैं।

	समास		विग्रह
उदाहरण			
	शताब्दी	–	शत् (सौ) अब्दों (वर्षों) का समूह
	चौराहा	–	चार राहों का समाहार
	सप्ताह	–	सात अहनों (दिन) का समूह
	नवरस	–	नौ रसों का समाहार
	सतरंगी	–	सात रंगों का समाहार
	सतसई	–	सात सौ दोहों का समाहार
	दुमट	–	दो प्रकार की मिट्टी

प्रश्न–'शतांश' शब्द में कौनसा समास है? परिभाषा सहित लिखिए।

उत्तर– शतांश–द्विगु समास

शतांश – शत (सौवाँ) अंश

परिभाषा– जिस समास के दोनों पदों में विशेषण विशेष्य संबंध हो और पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है।

– पूरा समास समूह का बोध कराता है।

नोट– द्विगु समास का तीसरा अर्थ निकलने पर बहुव्रीहि समास हो जाता है।

उदा. त्रिनेत्र – तीन नेत्र है जिसके शिवजी

5. द्वन्द्व समास :

प्रश्न–द्वंद्व समास को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – द्वंद्व समास के दोनों पदों के बीच और, या, अथवा आदि पदों का लोप रहता है।

– इस मे दोनों पद प्रधान होते हैं।

	समस्त पद		विग्रह
उदाहरण			
	राम–कृष्ण	–	राम और कृष्ण
	माँ–बाप	–	माँ और बाप
	बेटी–बेटा	–	बेटी और बेटा
	जीवन–मरण	–	जीवन या मरण
	पाप–पुण्य	–	पाप या पुण्य
	लाभ–हानि	–	लाभ या हानि
	चराचर	–	चर या अचर
	आकाश पाताल	–	आकाश या पाताल
	इधर उधर	–	इधर या उधर
	भला–बुरा	–	भला या बुरा
	सौ–दो सौ	–	सौ या दो सौ
	चौंसठ	–	चार और साठ
	चौबीस	–	चार और बीस

प्रश्न– 'भला–बुरा' पद में कौनसा समास है?

उत्तर– भला–बुरा द्वंद्व समास

विग्रह – भला या बुरा

नोट– द्वंद्व समास के विग्रह में कभी–कभी आदि शब्द जोड़ा जाता है।

उदाहरण

दाल–रोटी – दाल और रोटी आदि

हाथ–पैर – हाथ और पैर आदि

कुर्त्ता–टोपी – कुर्त्ता और टोपी आदि

साँप–बिच्छु – साँप और बिच्छु आदि

नोट : सार्थ–निरर्थक शब्दों में भी द्वन्द्व होता हैं।

उदा. अड़ोसी–पड़ोसी – अड़ोसी–पड़ोसी आदि।

चाय–वाय – चाय आदि।

6. बहुव्रीहि समास

प्रश्न–बहुव्रीहि समास को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर– जिस समास में दोनों पदों का अर्थ न लेकर अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

– इस समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है।

समास विग्रह

उदाहरण

आशुतोष – वह जो शीघ्र तुष्ट हो जाते है शिव

वक्रतुण्ड – जिसका तुण्ड (मुख) वक्र (टेढ़ा) है वह गणेश

अनंग – जो बिना अंग का है वह कामदेव

देवराज – जो देवों का राजा है वह इन्द्र

चक्षुश्रवा – जिसके चक्षु (नेत्र) ही श्रवण (कान) है वह साँप

नाकपति – वह जो नाक (स्वर्ग) का पति है– इन्द्र

ब्रजवल्लभ – वह जो व्रज का वल्लभ (स्वामी) है– कृष्ण

मधुसूदन – मधु राक्षस का सूदन (वध) करने वाला वह कृष्ण

मकरध्वज – वह जिसके मकर (मछली) का ध्वज है वह कामदेव

पंचानन – वह जिसके पंच आनन (मुख) हैं– शिव

चन्द्रमोलि – वह जिसके मोलि (मस्तक) पर चंद्रमा है वह शिव

वाग्देवी – वह जो वाक् (भाषा) की देवी है वह सरस्वती

वज्रांग – वज्र का है अंग जिसके है वह हनुमान

हिरण्यगर्भ – वह जिसके हिरण्य (सोना) का है गर्भ–ब्रह्मा

रेवतीरमण – वह जो रेवती के साथ रमण करता है–बलराम

रोहिणी नन्दन – वह जो रोहिणी का नन्दन है–बलराम

सुधाकर – वह जो सुधा (अमृत) को संभव करने वाला है–चंद्रमा

वसुन्धरा – वह जो वसु (रत्न) को धारण करती है–पृथ्वी

शाखामृग – वह मृग जो शाखाओं पर रहता है–वानर

प्रज्ञाचक्षु – वह जिसके प्रज्ञा की चक्षु है – अंधा

लम्बकर्ण – वह लम्बे है कर्ण जिसके – गणेश

दामोदर – वह दाम (रस्सी) के समान उदर है जिसका – विष्णु

मृत्युंजय – मृत्यु को जय करने वाला वह–शिव

चतुरानन – वह जिसके चार आनन है–ब्रह्मा

षड़ानन – वह जिसके षट् आनन है–कार्तिकेय

त्रिनेत्र – तीन नेत्र हैं जिसके वह शिव

प्रश्न– कोई दो समासों में अंतर लिखिए।

उत्तर–दोनों समासों की परिभाषा लिखनी है।

प्रश्न संख्या–12 (वाक्य शुद्धि) अंकभार–02 (लघूत्तरात्मक1) ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति

प्रश्न–निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखें–

क. खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।

ख. दही खट्टी है।

उत्तर– क. खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।

ख. दही खट्टा है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. अनावश्यक संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ–	
भोजन बनाने की व्यवस्था का प्रबंध करें।	भोजन बनाने की व्यवस्था करें।
भारत गुलामी की दासता से मुक्त हुआ	भारत गुलामी से मुक्त हुआ।
वह अपनी ताकत के बल पर जीता है।	वह अपने बल पर जीता है।
मैं मंगलवार के दिन व्रत रखता हूँ।	मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।
तुम बीस तारीख के दिन कहाँ रहोगे?	तुम बीस तारीख को कहाँ रहोगे?
मैं प्रातःकाल के समय घूमने जाता हूँ।	मैं प्रातःकाल घूमने जाता हूँ।
दिनेश बहुत सज्जन पुरुष है।	दिनेश बहुत सज्जन है।
2. अनुपयुक्त संज्ञा पद संबंधी अशुद्धियाँ–	
वह दही जमा रही है।	वह दूध जमा रही है।
रेडियो की उत्पत्ति किसने की?	रेडियो का आविष्कार किसने किया?
कुछ अच्छा होने की आशंका है।	कुछ अच्छा होने की आशा है।
कंश की हत्या कृष्ण ने की।	कंश का वध कृष्ण ने किया।
मैंने इस काम में अशुद्धि की।	मैंने इस काम में भूल की।
दंगे में गोलियों की बाढ़ आ गई।	दंगे में गोलियों की बौछार हो गई।
3. सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ	
कोई ने कहा।	किसी ने कहा।
मैंने वहाँ नहीं जाना है।	मुझे वहाँ नहीं जाना है।
वह उसका चश्मा भूल गया।	वह अपना चश्मा भूल गया।
पिताजी ने मुझसे कहा।	पिताजी ने मुझे कहा।
मैं तेरे को बता दूँगा।	मैं तुझे बता दूँगा।
उसने जल्दी घर जाना है।	उसे जल्दी घर जाना है।
चाय में कौन गिर गया।	चाय में क्या गिर गया।
वह लोग जा रहे हैं।	वे लोग जा रहे हैं।
4. विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ–	
यह सबसे सुंदरतम घाटी है।	यह सबसे सुंदर घाटी है।
आज उसके गुप्त रहस्य का राज खुला।	आज उसके रहस्य का राज खुला।
धोबी ने अच्छी चादरें धोई।	धोबी ने चादरें अच्छी धोई।
गहरी समस्या।	गंभीर समस्या।
5. क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ–	
वह सिलाई और अंग्रेजी पढ़ती है।	वह सिलाई सीखती है और अंग्रेजी पढ़ती है।
वह नहाना माँगता है।	वह नहाना चाहता है।
वह कमीज डालकर सो गया।	वह कमीज पहनकर सो गया।
जो बोला वह कर।	जो कहा वह कर।
वह गालियाँ निकालता रहा।	वह गालियाँ बकता रहा।
6. कारक संबंधी अशुद्धियाँ–	
मैंने क्या करना है?	मुझे क्या करना है?
वह बस के साथ यात्रा कर रहा है।	वह बस से यात्रा कर रहा है।
तुमका यहाँ क्या काम है।	तुम्हारा यहाँ क्या काम है।
इत्र के भीतर सुगंध है।	इत्र में सुगंध है।
खेत पर क्या बोया है।	खेत में क्या बोया है।
7. लिंग संबंधी अशुद्धियाँ–	
दही खट्टी है।	दही खट्टा है।
उसके दर्द हो रही है।	उसके दर्द हो रहा है।
बात करना है।	बात करनी है।
बेटी पराये घर का धन होता है।	बेटी पराये घर का धन होती है।
8. वचन संबंधी अशुद्धियाँ–	
मेरी घड़ी में तीन बजा है।	मेरी घड़ी में तीन बजे हैं।
उसकी आँख से आँसू बह रहा है।	उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।
चारों लड़कों का नाम बताओ।	चारों लड़कों के नाम बताओ।
चार घंटा।	चार घंटे।
उसका प्राण उड़ गया।	उसके प्राण उड़ गये।

प्रश्न संख्या–13 (मुहावरा) अंकभार–02(लघूत्तरात्मक1) अवबोध

मुहावरा– मुहावरा एक ऐसा वाक्यांश है जो वाक्य रचना में अपना विशेष अर्थ प्रकट करता है।

प्रश्न–निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए –

क. चाँदी का जूता मारना – रिश्वत देना

ख. काम निकालना – स्वार्थ पूरा करना

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज) में प्रयुक्त मुहावरे

1. भ्रमरगीत (सूरदास)

मुहावरा	अर्थ	वाक्य प्रयोग
मन माने की बात	–मन को जो अच्छा लगे	किसी को मीठा अच्छा लगता है तो किसी को खट्टा यह तो मन माने की बात है।

2. लक्ष्मण–परशुराम संवाद (तुलसीदास)

काल के बस में होना	– मौत के शिकंजे में होना	प्राणी जन्म लेते ही काल के बस में हो जाता है।
फूँक से पहाड़ उड़ाना	– काल्पनिक वीरता दिखाना	जिनमें ताकत नहीं होती वे केवल फूँक से पहाड़ उड़ाते हैं।
काल कवल होना	– मौत का शिकार होना	जो इस संसार में आया है उसे एक दिन काल कवल होना है।
काल को हाँक लाना	– मौत की स्थितियाँ पैदा करना	अरे! सड़क पर भारी वाहनों के बीच घुसकर क्यों बिना बात काल को हाँक कर लाना चाहते हो।
माथे काढ़ना	– किसी पर गुस्सा उतारना	तुम किसी का दोष मेरे माथे क्यों काढ़ रहे हो।
कुम्हड़बतिया होना	– कमजोर होना	भारतीय वीर कुम्हड़बतिया नहीं हैं जो शत्रु से डर जायें।

3. ऋतु वर्णन (सेनापति)

महाझर लगना	– तेज वर्षा होना	वर्षा ऋतु में बादलों की महाझर लगी रहती है।
छाती की छाया में रखना	– सुरक्षित रखना	लोग धन को छाती की छाया में रखते हैं।

4. कवित्त (देव)

फूला न समाना	– अत्यधिक प्रसन्न होना	बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर हेमंत फूला नहीं समा रहा है।
भाग्य सो जाना	– मनोवांछित लाभ न मिलना	काफी परिश्रम करने पर भी परीक्षा परिणाम आने पर मेरा भाग्य सो गया।

5. राजिया रा सोरठा (कृपाराम खिड़िया)

बेमौसर की बात	– निरर्थक बातें करना	नासमझ लोग प्राय बेमौसर की बात किया करते हैं।
संगत का असर होना	– संगत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देना	चंदन के वृक्षों के साथ उगने से अन्य वृक्षों पर भी संगत का असर हो जाता है।

7. अभी न होगा मेरा अंत, मातृ–वंदना (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला)

अमृत से सींचना	– जीवनी शक्ति का संचार करना	वसंत ऋतु सभी पेड़ पोधों को जीवनी शक्ति से सींचती है।
तन देना	–प्राण न्यौछावर करना	सच्चे देशभक्त मातृभूमि की रक्षा में अपना तन देने में संकोच नहीं करते हैं।

9. कल और आज, उषा की लाली (नागार्जुन)

लाव लश्कर समेटना	–सामान समेटकर चल देना	भारत को आजादी मिलते ही अंग्रेज अपना लाव–लश्कर समेटकर चले गये।

10. कन्यादान (ऋतुराज)

दुख बाँचना	– दुख को समझना	वैवाहिक जीवन के सुख तो नजर आते हैं, पर उसे दुख बाँचने नहीं आते।

11. एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न (भारतेंदु)

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य प्रयोग**
तप्त तवे की बूँद होना	– क्षणिक या नाशवान होना।	सांसारिक वैभव तप्त तवे की बूँद के समान होता है। देखते–देखते नष्ट हो जाता है।
मुख फेरकर भी न देखना	– भुला देना/तनिक भी महत्व न देना।	काम निकल जाने पर उसने मुझे मुख फेरकर भी नहीं देखा।
डूबते–डूबते बचना	– अप्रत्याशित रूप से हानि से बचना।	व्यापार में मेरा धन डूबते–डूबते बच गया।
घर की केवल मूँछें ही मूँछें होना	– स्वयं के पास नाममात्र का साधन होना।	मित्रों ने समय–समय पर सहायता कर दी तो मेरा मकान बन गया। मेरे पास तो घर की मूँछें ही मूँछें थी।
हाथ लगना	– अचानक प्राप्त होना।	रास्ते में मेरे हाथ एक थैली लगी जो नोटों से भरी थी।
दिन काटने पड़ना	– कठिनाईयों में दिन बिताना।	गरीबी के कारण उसे कष्ट में दिन काटने पड़ रहे हैं।
पानी फेरना	– व्यर्थ बना देना।	अपनी मूर्खता से उसने मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया।

12. ईदगाह (प्रेमचंद)

राई का पर्वत बना देना	– बहुत छोटी या साधारण बात को बहुत बड़ा बना देना।	बच्चे अपनी कल्पना से राई का पर्वत बना देते हैं।

दिल के अरमान निकालना	– ईच्छा पूरी करना।	मेरे पिताजी विदेश से आयेंगे तब मैं अपने दिल के अरमान निकालूँगा।
सिर पर सवार होना	– बात मनवाने के लिए अड़ना।	उधारी वसूलने वाले सिर पर सवार हो जाते हैं।
मुँह चुराना	– सामने न आना।	उधार न चुका पाने के कारण वह मुँह चुराता फिरता है।
जी चुराना	– परिश्रम से बचना।	पढ़ने से जी चुराओगे तो कष्ट उठाने पड़ेंगे।
दिल बैठ जाना	– हिम्मत न रहना या निराश होना।	10 वीं कक्षा में कम अंक आने पर उसका दिल बैठ गया।
नानी मर जाना	– भयभीत हो जाना।	पुलिस को देखते ही चोरों की नानी मर गई।
आग में कूदना	– साहस दिखाना/साहसी कार्य करना।	उग्र भीड़ के बीच जाना आग में कूदने के समान है।
ईद का मुहर्रम होना	– खुशी का शोक में बदलना।	घर में त्योहार मनाने की खुशी थी, परंतु दादाजी के अचानक निधन के कारण ईद मुहर्रम हो गई।
मुँह की खाना	– हार मानना	कमजोर आदमी को ताकतवर से सदा मुँह की खानी पड़ती है।
फकीरों का चिमटा होना	–एक वस्तु से सब काम साधना	हामिद ने चिमटा खरीदा था जो फकीरों के चिमटे के समान बड़ा उपयोगी था।
छक्के छूट जाना	– हिम्मत हार जाना	भारतीय सेना को देखते ही दुश्मन के छक्के छूट जाते हैं।
ऐड़ी चोटी का जोर लगाना	– पूरी शक्ति से काम करना	उसने सफलता पाने के लिए ऐड़ी चोटी का जोर लगाया।
रंग जमाना	– प्रभाव जमाना	हामिद के चिमटे ने सब पर अपना रंग जमा दिया।
माटी में मिल जाना	– नष्ट/बरबाद होना	अकाल के कारण कई लोगों का जीवन माटी में मिल गया।

13. स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (महावीर प्रसाद द्विवेदी)

छक्के छुड़ा देना	– घबरा देना	भारतीय सेना ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिये।
गई–बीती समझना	– महत्वहीन समझना	पुराणों की बात काल्पनिक हैं तो नाटकों की बातें तो और ज्यादा गई बीती समझनी चाहिए।
सोलहों आने होना	– पूर्ण होना/पूर्ण सत्य होना।	योग भगाये रोग। यह बात सोलह आने सत्य है।
दलीलें पेश करना	– तर्क कुतर्क कर अपनी बात को महत्व देना	न्यायालयों में वकील दलील पेश कर मुकदमा जीतना चाहते हैं।

14. अमर शहीद (लक्ष्मीनारायण रंणा)

नाक कटवा देना	– सम्मान गिरा देना।	अपनी इस घटिया हरकत से तुमने पूरे परिवार की नाक कटवा दी।
नाक ऊँची कराना	– सम्मान बढ़ाना	सैनिक शहीद होकर अपने परिवार, समाज और देश की नाक ऊँची करा देता है।
छत्रछाया पाना	– आश्रय या सुरक्षा पाना	गुरुजी की छत्रछाया में विद्यार्थी सफलता प्राप्त करते हैं।
प्राणों की बाजी लगाना	– जीवन को दाँव पर लगाना/शहीद होना	शत्रु को परास्त करने के लिए वीर सैनिक प्राणों की बाजी लगा देते हैं।
खून पसीने से सींचना	– घोर परिश्रम और त्याग करना	अपने खून पसीने से सींचकर ही देशभक्तों ने स्वतंत्रता की बेल बढ़ाई।
प्राण पखेरू उड़ना	– मृत्यु हो जाना	भयंकर दुर्घटना में उसका प्राण पखेरु उड़ गया।
मजा चखाना	– बदला लेना	देश के दुश्मनों को उनकी करतूतों का मजा चखाया जायेगा।
कच्ची गोलियाँ न खेलना	– सटीक सामना करना	भारतीय पहलवान दंगल में कच्ची गोलियाँ नहीं खेलते हैं।
नमक हराम होना	– फर्ज न निभाना	अपनी मातृभूमि के साथ गद्दारी करने वाले नमक हराम होते हैं।
मौत की गौद में सिर रखना	– सहर्ष प्राणों का बलिदान करना	क्रांतिकारी देशभक्त मौत की गौद में सिर रखकर शहीद हुए थे।
पूर्णाहुति होना	– कठिन कार्य का पूरा होना	शहीदों के बलिदान से ही स्वतंत्रता रूपी यज्ञ की पूर्णाहुति हो पायी।
गला घोंटना	– आवाज दबाना	भ्रष्टाचारी लोग न्याय का गला घोंटने में लगे रहते हैं।
मन के अरमान पूरे होना	– मनचाही हो जाना	इस स्वार्थी संसार में सज्जन लोगों के मन के अरमान पूरे नहीं हो पाते हैं।

15. आखिरी चट्टान (मोहन राकेश)

आँखों में समेटना	– अच्छी तरह देखना	प्रकृति के सुंदर दृश्यों को सभी यात्री आँखों में समेट लेना चाहते थे।

कुँआरापन टूटना	– प्रथम बार प्रयोग में आना	हिमालय की पवित्र चोटी पर पहुँचकर हमें ऐसा लगा उसी समय उसका कुँआरापन टूटा हो।
हिमाकत करना	– अक्षम्य भूल करना	देश के साथ गद्दारी की हिमाकत करना सहन नहीं की जा सकती।
हाथ पैर पटकना	– खूब प्रयास करना	कुछ लोग रातोंरात लखपति बनने के लिए हाथ–पैर पटकते रहते हैं।
सिर धुनना	– परेशानी प्रकट करना	लाख कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिलती है तो लोग सिर धुनने लग जाते हैं।
मन मारना	– उत्साह रहित होना	बार–बार असफल होने पर व्यक्ति किसी काम को मन मारकर करता है।

16. ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से (दिनकर)

कलेजा जलना	– ईर्ष्या करना	दूसरों की प्रगति देखकर पड़ोसियों के कलेजे जलते रहते हैं।
आँखों से गिर जाना	– सम्मान न रहना	अपने बुरे व्यवहार के कारण वह मित्रों की आँखों से गिर गया।
गुणों को कुंठित बनाना	– गुणों का कम होना	अपने अनैतिक आचरण से व्यक्ति अपने गुणों को कुंठित बना डालता है।
सिर खुजलाना	– सोच विचार करना या कारण जानना	मित्र के बुरे व्यवहार के कारण वह सिर खुजला रहा था।
अनुभवों को निचोड़ना	– अनुभवों का सार निकालना	गुरुजन विद्यार्थियों को अनुभवों का सार बताते हैं।
दिल का गुबार निकालना	– दबी भावनाओं को प्रकट करना	उसने अपने मित्र के सामने अपने दिल का गुबार निकाला।
जहर की चलती–फिरती गठरी	– दुर्भावना से ग्रस्त व्यक्ति	कुछ लोग जहर की चलती–फिरती गठरी बनकर अकारण दूसरों का बुरा करते हैं।
दिल का छोटा होना	– कंजूस स्वभाव का व्यक्ति होना	जो व्यक्ति छोटे दिल का होता है वह दूसरों को संकुचित दृष्टि से देखता है।

18. लोक संत दादू दयाल

रेखांकित करना	– ध्यान आकर्षित करना	महत्वपूर्ण बातों को हमें रेखांकित करना चाहिए।

19. लोक संत पीपा

संसार का फंदा काटना	– सांसारिक मोह से मुक्त करना	संतों की संगति से व्यक्ति संसार का फंदा काटने में सफल हो जाता है।
हृदय में जीवित रहना	– सदा मन में निवास करना	महापुरुष मृत्यु के उपरांत भी लोगों के हृदय में जीवित रहते हैं।
आत्मा जाग उठना	– आध्यात्मिक ज्ञान जाग्रत होना	रामानंद से दीक्षा पाकर संत कबीर की आत्मा जाग उठी।
मन उचट जाना	– मन न लगना	जीवन में लगातार असफलता मिलने से उसका मन उचट गया।
लोहे से सोना बनाना	– साधारण से महान बनाना	स्वामी रामानंद ने अपने उपदेश से पीपा जैसे व्यक्ति को लोहे से सोना बना दिया।
पंच तत्व का शरीर होना	– सर्वथा नश्वर होना	इस संसार में सभी प्राणियों का पंच तत्व का शरीर है, इस पर गर्व करना व्यर्थ है।

19. सड़क सुरक्षा

प्रश्नसूचक दृष्टि से देखना	– आँखों में जिज्ञासा या कारण जानने का भाव होना।	छात्र ने गुरुजी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

लोकोक्ति का अर्थ –(प्रश्न संख्या–14) अंकभार–01(अति लघूत्तरात्मक) ज्ञानोपयोगी

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

11. एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न (भारतेंदु)

लोकोक्ति	अर्थ
कुछ जल कुछ गंगाजल	–मिलावट से काम चलाना

12. ईदगाह (प्रेमचंद)

हराम का माल हराम में जाये – पाप की कमाई बच नहीं पाती है

13. स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (महावीर प्रसाद द्विवेदी)

स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष घूँट – एक ही कार्य के परस्पर विरोधी परिणाम मानना

14. अमर शहीद (लक्ष्मीनारायण रंणा)

जिस थाली में खाए उसी में छेद करे – उपकार को भुलाना

नींव के पत्थर का महत्त्व हर कीर्ति स्तंभ से बढ़कर होता है –देश धर्म पर बलिदान होने वालों यश राजा महाराजाओं से ज्यादा होता है।

एक लौ जलकर ही हजारों दीप जला सकती है – एक देश भक्त के बलिदान से ही हजारों लोगों में देश के लिए बलिदान की भावना जागती है।

प्राण पखेरू जाने कब उड़ जाएँ? – मानव जीवन अनिश्चित है/न जाने कब मृत्यु आ जाये

16. ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से (दिनकर)

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से –ईर्ष्या के भाव को मानव मन से निकाल पाना बड़ा कठिन है।

18. लोक संत दादू दयाल (रामबक्ष)

निरबैरी निहकामी साध, ता सिर देत बहुत अपराध –किसी से बैर न करने वाले और निष्काम स्वभाव वाले सज्जनों पर लोग दोष लगाया करते हैं।

दादू निंदा ताकौं भावै, जाकै हिरदे राम न आवै – ईश्वर विरोधी को निंदा करना अधिक सुहाता है।

19. लोक संत पीपा (संकलित)

जो ब्रह्माण्डे सोई पिण्डे – परमात्मा ही जीव में आत्मा रूप में विद्यमान है।

एकै मारग तें सब आया – मनुष्य मात्र का जन्म एक ही प्रकार से होता है अतः सभी बराबर हैं।

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज)

प्रश्न संख्या–15 सप्रसंग व्याख्या(पद्य से) अंक भार–2+4(ज्ञानोपयोग व अभिव्यक्ति) विकल्प सहित

प्रश्न संख्या–16 सप्रसंग व्याख्या(गद्य से) अंक भार–2+4(ज्ञानोपयोग व अभिव्यक्ति) विकल्प सहित

प्रश्न संख्या–17. (निबंधात्मक प्रश्न–पद्य से)– उत्तर सीमा–200 शब्द, अंकभार–6(ज्ञानोपयोग व अभिव्यक्ति) विकल्प सहित,

प्रश्न संख्या–18. (निबंधात्मक प्रश्न–गद्य से)– उत्तर सीमा–200 शब्द, अंकभार–6 (अभिव्यक्ति) विकल्प सहित

प्रश्न संख्या–19. (लघूत्तरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2(ज्ञानात्मक)

प्रश्न संख्या–20. (लघूत्तरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2(ज्ञानात्मक)

प्रश्न संख्या–21. (लघूत्तरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2 (अवबोध)

प्रश्न संख्या–22. (लघूत्तरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2 (अवबोध)

प्रश्न संख्या–23 (लघूत्तरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2 (ज्ञानोपयोग व अभिव्यक्ति)

प्रश्न संख्या–24 (लघूत्तरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2 (कौशल/मौलिकता)

नोट–प्रश्न संख्या 23 व 24 सड़क सुरक्षा संबंधित पाठ से रहेंगे।

प्रश्न संख्या–25 (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार–(अवबोध)

प्रश्न संख्या–26 (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार–(अवबोध)

प्रश्न संख्या–27 (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार– (ज्ञानात्मक)

प्रश्न संख्या–28 (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार– (अवबोध)

प्रश्न संख्या–29 (कवि परिचय–पद्य से) उत्तर सीमा –आधा पेज अंक भार–3 (अवबोध)

प्रश्न संख्या–30 (लेखक परिचय–गद्य से) उत्तर सीमा–आधा पेज अंक भार–3 (अवबोध)

अतिलघूत्तरात्मक व लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

सूरदास–

1. गोपियों को भ्रमर के रूप में कौनसा दूत मिला?

उत्तर– उद्धव।

2 'सूरदास प्रभु सरबस लुट्यो' कृष्ण ने किसका क्या सर्वस्व लूटा था? बताइए।

उत्तर– कृष्ण ने गोपियों का सर्वस्व लूट लिया था।

3. 'बुझत स्याम कौन तू गोरी' पंक्ति में 'गोरी' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

मिशन उत्कर्ष 100

उत्तर– राधा के लिए।

4.मथुरा के कुएँ किससे भर गए?
उत्तर– मथुरा के कुएँ गोपियों द्वारा भेजे गए संदेशों से भर गए।

5. कठोर काठ में छेद करने वाला भौंरा क्या नहीं कर पाता?
उत्तर– कठोर काठ में छेद कर सकने वाला भौंरा कोमल कमल में छेद नहीं कर पाता क्योंकि वह उससे प्रेम करता है।

6. कृष्ण ने राधा से क्या पूछा?
उत्तर– कृष्ण ने पूछा कि वह कौन है, किसकी बेटी है, कहाँ रहती है? इससे पहले उसे ब्रज की गलियों में क्यों नहीं देखा?

7. राधा कृष्ण के बारे में क्या सुनती थी?
उत्तर– राधा ने सुना था कि ब्रज में नंद का पुत्र गोपियों के घरों से मक्खन और दही चुराता है।

8. सूरदास पाठ के आधार पर राधा–कृष्ण के वार्तालाप का सारांश लिखिए।
उत्तर– राधा को देखकर कृष्ण ने पूछा कि तुम कौन हो, किसकी बेटी हो, कहाँ रहती हो, मैंने तुम्हें ब्रज की गलियों में कभी नहीं देखा? तब राधा ने कहा कि मैं अपनी पोरी में ही खेलती हूँ। सुना है कि यहाँ नंद का बेटा मक्खन–दही की चोरी करता है।
प्रश्न 6 व 7 के जवाब एक साथ लिख देने से इस सवाल का जवाब बन जाएगा।

9. विष का कीड़ा क्या करता है?
उत्तर– विष का कीड़ा अँगूर–छुहारे जैसे अमृत जैसे फलों को छोड़कर विष को ही खाता है।

10. चकोर पक्षी क्या करता है?
उत्तर– चकोर पक्षी को कोई शीतल या सुगंधित पदार्थ कपूर भी दे तो वह उसे भी त्यागकर अंगारे भी खाते हैं।

11. गोपियों ने भौंरे के बारे में क्या कहा है?
उत्तर– भौंरा कठोर काठ में छेद करके अपना घर बना लेता है लेकिन कोमल कमल से प्रेम करने के कारण उसमें बन्द होने के बावजूद भी उसे काटता नहीं है।

12. पतंगे की क्या विशेषता बताई है?
उत्तर– पतंगा दीपक से अत्यधिक प्रेम करता है। वह अपने प्रेम की खातिर दीपक की लौ में जलकर खुद को भस्म कर लेता है।

13. 'ऊधौ मन माने की बात है' पंक्ति के माध्यम से गोपियाँ उद्धव को क्या कहना चाहती हैं?
उत्तर– गोपियाँ कहना चाहती हैं कि जिसके मन को जो अच्छा लगता है या सुहाता है वह वही करता है। इसके आगे वे कहती हैं कि.... प्रश्न संख्या 9, 10, 11 व 12 का जवाब एक साथ लिख देने से ये प्रश्न स्वतः ही तैयार हो जाएगा।

तुलसीदास–

लक्ष्मण–परशुराम संवाद
1. शिव धनुष भंग होने पर कौन क्रुद्ध हुए थे?
उत्तर– परशुराम।

2. परशुराम के अनुसार सेवक की क्या पहचान होती है?
उत्तर– परशुरामका अनुसार सेवक वही है जो सेवक (सेवकाई) का काम करे।

3. भृगुकुलकेतु किसे कहा गया है?
उत्तर– परशुराम को।

4. 'अयमय खाँड न ऊखमय' किसके बारे में आया है?
उत्तर– गुरु विश्वामित्र का विचार है। जो लक्ष्मण के बारे में किया गया था।

5 लक्ष्मण ने कुम्हड़बतिया शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया था?
उत्तर– लक्ष्मण ने इस शब्द का प्रयोग दुर्बल और कमजोर के लिए किया था।

मिशन मेरिट 100

6 गाधिसूनु शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
उत्तर– गाधिसूनु शब्द राम–लक्ष्मण के गुरु विश्वामित्र के लिए किया गया है।

7. क्रोध पर विनय और व्यंग्य का अलग–अलग प्रभाव पड़ता है, लक्ष्मण–परशुराम संवाद के आधार पर बताइए।
उत्तर– विनय से क्रोध शांत होता है और व्यंग्य से भड़कता है। लक्ष्मण–परशुराम संवाद में भी लक्ष्मण द्वारा परशुराम के आचरण और स्वभाव को लेकर व्यंग्य किया तो उनका क्रोध भड़क उठा था जबकि राम द्वारा विनयपूर्ण बात की गई तो परशुराम का क्रोध शांत हुआ था।

8. मुनि विश्वामित्र के कथन 'मुनिहि हरिअरइ सूझ' का क्या आशय था?
उत्तर– इसक्त आशय था कि परशुराम अपने अहंकार के कारण परिस्थिति की कठोर सच्चाई को समझ नहीं पा रहे हैं। उन्हें पहले की भाँति हरा ही हरा दिख रहा है। वे समझते हैं कि वह लक्ष्मण और राम पर भी सहस्रबाहु की भाँति विजय पा लेंगे जबकि सच्चाई ये थी कि राम और लक्ष्मण अवतारी पुरुष और वीर यौद्धा थे।

9 'अयमय खाँड न ऊखमय, अजहूँ न बुझ अबूझ' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर– इस पंक्ति का आशय है कि परशुराम के सामने गन्ने के रस से बनी खाँड (शक्कर) नहीं है अपितु लोहे से बना हुआ खाँडा (तलवार) है। अर्थात परशुराम जिस लक्ष्मण को खाँड के समान आसानी से कटने वाला समझ रहे हैं,वह सामान्य बालक न होकर परम पराक्रमी वीर है, वह तलवार के समान प्रखर तथा दुर्घर्ष हैं। अतः लक्ष्मण से टक्कर लेना मुँह की खाना है।

सेनापति– ऋतु वर्णन

1. कवि सेनापति ने किसे ऋतुराज कहा है?
उत्तर– वसंत को ऋतुराज कहा गया है।

2. 'तिन तरबर सब ही कौं रूप हर्‌यो है' पंक्ति में कौनसा अलंकार आया है?
उत्तर– श्लेष अलंकार।

3. शीत ऋतु में अग्नि कैसी लगने लगती है?
उत्तर– ऐसा लगता है जैसे अग्नि खुद शीत से भयभीत है और लोग उसे अपनी छाती तले छिपाकर बचाए हुए हैं।

4. कवि सेनापति में वसंत की सेना किसे बताया है?
उत्तर– कवि ने फूल और फलों से लदे पेड़ों और वन–उपवन को वसंत की सेना बताया है।

5. सावन के माह में कामदेव नायिका को परेशान कैसे कर रहा है?
उत्तर– सावन का महीना आते ही आसमान में काली घटाएँ घिर आती हैं। बिजली चमकती है और बादल भयंकर गर्जना के साथ गरज रहे हैं। नन्हीं बूंदों से युक्त शीतल हवा बह रही है। ऐसे वातावरण में प्रेयसी को कामदेव के प्रभाव से विरहरूपी ज्वर आ जाता है। वह प्रिय मिलन को तरसने लगती है।

6. ऋतुराज वसंत के आगमन पर प्रकृति में क्या–क्या बदलाव आते हैं? 'ऋतु वर्णन' में संकलित छंदों के आधार पर लिखिए।
उत्तर– राजा वसंत के स्वागत में प्रकृति ने अनेक प्रकार की साज–सज्जा की है। वनों और उपवनों में विविध प्रकार के वृक्ष फूलों से लद गए हैं। कवि उनको ऋतुराज वसंत की चतुरंगिणी सेना बता रहा है। वसंत के स्वागत में कोयले कूक रही हैं। कवि के मुताबिक ये राजा वसंत की प्रशंसा करने वाले बंदीजन हैं। गुंजार करते भँवरे गुणी गायक और संगीतकार बने हुए हैं। सरसों के पीले फूलों से महकते खेत जैसे सोने की सुगंध का दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

7. कवि सेनापति ने वर्षा व ग्रीष्म ऋतु का वर्णन किस रूप में किया है?
उत्तर–कवि सेनापति ने ग्रीष्म और वर्षा ऋतु के वर्णन में श्लेष अलंकार को अपनाया है। उन्होंने बताया है कि ग्रीष्म में सब तरफ लू चलती है और वातावरण जल उठता है तो वहीं वर्षा में सब और जल वर्षा होती है। ग्रीष्म ने पृथ्वी का रूप हरा(हरण) है तो वर्षा में सब तरफ हरा हो गया है। इन दोनों ऋतुओं का ही प्राणियों पर पूरा प्रभाव दिखाई दे रहा है।

8. 'सीत कौ प्रबल सेनापति' कवित्त के आधार पर शीत ऋतु का वर्णन कीजिए।
उत्तर– कवि सेनापति के अनुसार शीत ऋतु में सर्दी का प्रकोप अत्यधिक फैल जाता है। ऐसा लगता है जैसे वह अपने दल–बल सहित आक्रमण कर रहा हो। आग भी इस समय कमजोर लगने लगती है। इस समय सूर्य भी कमजोर पड़ जाता है और वह चंद्रमा की तरह निस्तेज होने

मिशन अकादमी 100

लगता है। हवा भी शीत से बचने के लिए कमरों के कोनों में जाकर छिप जाती है। लोग आग को घेरकर बैठ जाते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे सर्दी से आग की रक्षा कर रहे हों। हवा भी तीर के समान लगने लगती है।

कवि देव

1. कवि देव ने कृष्ण की हँसी को किसके समान बताया है?
उत्तर– चंद्रमा की चाँदनी के समान।

2. कवि देव ने ब्रज दूलह किसे कहा है?
उत्तर– कृष्ण को।

3. देव ने कृष्ण की मंद हँसी को किसके समान बताया है?
उत्तर– चंद्रमा की चाँदनी के समान बताया है।

4. नायिका की आँखें कहाँ धँसी जा रही हैं?
उत्तर– नायिका की आँखें कृष्ण की सुंदरता और प्रेम–रस की धारा में धँस गई है।
5. 'सोय गए भाग मेरे' नायिका ने ऐसा क्यों कहा है?
उत्तर–नायिका सपने में कृष्ण के झूला झूलने के प्रस्ताव को सुनकर प्रसन्न हो रही थी लेकिन सपना टूट जाने के कारण वह खुद को भाग्यहीन समझने लगती है।
6. कृष्ण को 'जग–मंदिर–दीपक' बताने का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर– कवि देव ने कृष्ण को जग–मंदिर–दीपक बताकर उन्हें सम्पूर्ण विश्व को आनंदित करने वाला प्रतीक बनाया है। जिस प्रकार मंदिर में जलने वाला दीपक उसके अंधकार को दूर करता है और उसकी शोभा को बढ़ाता है।उसी प्रकार कृष्ण का सौंदर्य भी जगत के प्राणियों के जीवन को आनंद के प्रकाश से भर देने वाला है।
कृपाराम खिड़िया
राजिया के सोरठे–

1 राजिया का मूलनाम क्या था?
उत्तर– राजाराम।

2 दूध व नीर (जल) को कौन अलग–अलग कर सकता है?
उत्तर– राजहंस।

3 किसके घाव कभी नहीं भरते?
उत्तर– कटु वाणी द्वारा मन पर लगे घाव कभी नहीं भरते।

4 कवि के अनुसार किस नगर में नहीं रहना चाहिए?
उत्तर– जहाँ गुण–अवगुण की कोई पहचान न हो।

5– कठोर पहाड़ को भी कोमल जड़ कब भेद सकती है?
उत्तर– जब पहाड़ में दरार पड़ जाती है।

6 शक्कर में पगाने या अमृत से सींचने पर भी किसकी कड़वाहट खत्म नहीं होती?
उत्तर– आक या मदार की।

7 'जड़ कोमळ भिद जाय, राय पड़े जद राजिया' इससे क्या नीति सम्मत कथन व्यक्त हुआ है?
उत्तर– कवि कहना चाहता है कि समाज मे परस्पर एखता और दृढ़ संगठन बना रहना चाहिए।

8 जन्मजात प्रवृतियों में बदलाव असंभव है। राजिया के सोरठा के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर– हर प्राणी जन्म के साथ ही एक विशेष प्रकार का स्वभाव और आचरण लेकर आता है। यही उसका प्राकृतिक गुण होता है। इसे बदल पाना असंभव नहीं है। कृपाराम खिड़िया ने आक के पौधे द्वारा इसे सिद्ध किया है। आक के पौधे को चाहे शक्कर में पगा दो या अमृत से सींच दो लेकिन वह कड़वाहट नहीं छोड़ पाता है। क्योंकि वो उसका जन्मजात गुण होता है। इसी प्रकार ईर्ष्यालु और द्वेष रखने वाला व्यक्ति भी अपने स्वभाव को छोड़ नहीं पाता है।

शिक्षा बोर्ड मिशन 100

9 हीमत कीमत होय, कवि के इस कथन के बारे में अपने विचार लिखिए।
उत्तर– संसार मे मनुष्य की कीमत उसकी हिम्मत से पता चलती है। हिम्मत दिखाने पर ही मनुष्य का सम्मान होता है। जिस व्यक्ति में साहस नहीं होता उसिक कोई आदर भी नहीं करता। लोग रद्दी कागज की भाँति उसे भी कचरे की टोकरी में फेंक देते हैं अर्थात अपने जीवन से निकाल फेंकते हैं।

10 'पहली किया उपाव, दव, दुसमण, आमय दटै' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर– संसार में किसी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। खासकर आग, शत्रु और रोग की तो बिलकुल भी नहीं। इससे पहले कि ये तीनों ही गंभीर रूप धारण करके कोई बड़ा नुकसान कर दें। इन पर काबू पाने का प्रयास करना जरूरी है। जैसे आग भीषण होने पर जन–धन की भारी हानि कर देती है उसी प्रकार रोग और शत्रु भी बड़ा नुकसान कर सकते हैं। इसलिए समय रहते इनका इलाज करवाना आवश्यक है।

11 राजिया के सोरठों के आधार पर हिम्मत और पराक्रम के महत्त्व को सिद्ध कीजिए।
उत्तर– कवि कृपाराम खिड़िया ने अपने सोरठों में हिम्मत और पराक्रम के महत्त्व को प्रकाशित किया है। पराक्रम का अर्थ वीरता एवं तन–मन की सामर्थ्य से है। इसके लिए मनुष्य में हिम्मत का होना बहुत जरूरी है। जब तक हिम्मत नहीं होगी वह अपने शारीरिक बल का प्रयोग नहीं कर पायेगा। दुनिया का कोई भी काम हिम्मत और पराक्रम के बिना सफल नहीं होता है। उसी प्रकार सिंह भी अपने पराक्रम के द्वारा ही मृगराज बनता है।

जयशंकर प्रसाद– प्रभो

1 'अंशुमाली' का अर्थ क्या है? 'प्रभो' कविता के आधार पर बताइए।
उत्तर– अंशुमाली का अर्थ सूर्य से है।

2 'तरंग–मालाएँ गा रही हैं' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?
उत्तर– प्राकृतिक पदार्थ तरंग पर मानवीय क्रियाओं का आरोप कर दिए जाने के कारण इस पंक्ति में मानवीकरण अलंकार है।

3 कवि ने ईश्वर को अनादि क्यों कहा है?
उत्तर– चूँकि अनादि का अर्थ होता है– जिसका कोई आदि(आरंभ) न हो। कवि के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्मांड की रचना ईश्वर ने की है। अतः ईश्वर इस सृष्टि के निर्माण से पहले भी मौजूद था। जब हमें सृष्टि के आरंभ का ही नहीं पता तो उसके सृजनकर्त्ता के बिरे में कैसे जान सकते हैं। इसलिए ईश्वर को अनादि कहा गया है।

4 कवि ने ईश्वर को किस असीम उपवन का माली बताया है?
उत्तर– कवि ने ईश्वर को सृष्टिरूपी उपवन का माली बताया है।

5 'प्रभो' कविता का वर्ण्य–विषय क्या है?
उत्तर– प्रस्तुत कविता ईश्वर को संबोधित रचना है। कवि ने ईश्वर के स्वरूप और उसकी व्यापकता की महिमा का वर्णन किया है।

नागार्जुन

1 'उषा की लाली' कविता में किस समय का वर्णन किया गया है?
उत्तर– उक्त कविता में सूर्योदय के समय का वर्णन हुआ है।

2 कविता उषा की लाली में हिमगिरि किसे कहा गया है?
उत्तर– कविता में हिमालय को हिमगिरि कहा गया है।

3 किसान प्रकृति को क्यों कोस रहे थे?
उत्तर– प्रकृति द्वारा लाई गई ग्रीष्म ऋतु के कारण उनके खेत सूखे पड़े थे। इसलिए किसान प्रकृति को कोस रहे थे।

4 ऊपर ही ऊपर तंबू बनने का आशय है?
उत्तर– आकाश में बादलों का छा जाना।

5 वर्षा को किसकी संज्ञा दी गई है?
उत्तर– वर्षा को रानी (पावस रानी) की संज्ञा दी गई है।

6 अविराम शहनाई कौन बजा रहे थे?
उत्तर–झींगुर अविराम शहनाई बजा रहे थे।

मिशन शैक्षणिक 100

7 कवि किसकी शिराओं में जान आने की बात कहता है?
उत्तर– कवि गर्मी में झुलसी दूब की शिराओं में वर्षा के कारण जान आने की बात कहता है।

8 कवि किसे अपलक देखता रह गया?
उत्तर– कवि उषाकाल की बदलती आभा को अपलक देखता रह गया।

9 हिमालय के शिखर उषा की लाली में कैसे दिख रहे हैं?
उत्तर–हिमालय के सुनहले शिखर उषा की लाली में निखरे हुए लग रहे हैं।

10 कवि ने उषा की लाली कविता में जादुई आभा किसे और क्यों कहा है?
उत्तर–कवि ने निरंतर रूप बदल रहे सूर्योदय के समय के प्रकाश को जादुई आभा कहा है। उषाकाल में वह लाल था। सूर्य जब क्षितिज से थोड़ा ऊपर आया तो वह सुनहले हो गया। यह दृश्य किसी जादू के खेल जैसा प्रतीत हो रहा था। इसीलिए कवि ने इसे जादुई आभा कहा है।

ऋतुराज– कन्यादान

1 कवि ने अंतिम पूँजी किसे बताया है?
उत्तर– कवि ने अंतिम पूँजी लड़की को बताया है।

2 कवि ने स्त्री जीवन का बंधन किसे बताया है?
उत्तर– कवि ने वस्त्रों और आभूषणों को स्त्री जीवन का बंधन बताया है।

3 लड़की को दान में देते वक्त माँ को कैसा लग रहा था?
उत्तर– माँ को लग रहा था जैसे बेटी के रूप में उसके जीवन की एकमात्र और अंतिम पूँजी भी चली जा रही है।

4 माँ ने लड़की को अंतिम सीख क्या दी?
उत्तर– माँ ने बेटी से कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखना मत।

5 माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसा दिखना मत?
उत्तर– माँ को दुनियादारी की असली समझ थी। उसे पता था कि लड़की को लड़कों की तुलना में कमतर और दुर्बल माना जाता है। वह चाहती थी कि उसकी बेटी में बेटी होने के कारण कोई हीन भावना न आने पाए। माँ चाहती थी कि उसकी बेटी खुद को कमजोर और दुर्बल न समझे और साहस और स्वाभिमान के साथ अपना जीवन व्यतीत करे।

6 'पाठिका थी धुंधले प्रकाश की' पंक्ति से कवि का क्या आशय है?
उत्तर– धुँधले प्रकाश में किसी चीज को स्पष्ट रूप से देख और समझ पाना कठिन होता है। उसी प्रकार वह भोली लड़की भी विवाहित जीवन की मधुर कविता को अस्पष्ट रूप से देख पा रही थी। कवि का भाव ये है कि लड़की विवाहित जीवन के सुखमय पक्ष का तो थोड़ा–बहुत ज्ञान रखती थी लेकिन उसमें आने वाली कठिनाइयों और जिम्मेदारियों से अपरिचित थी।

7 कन्यादान कविता की भाषा–शैली पर अपने विचार लिखिए।
उत्तर– कन्यादान कविता की भाषा तत्सम, तद्भव और विदेशी शब्दों से युक्त है। कवि ने प्रतीकात्मक और लाक्षणिक शैली का प्रयोग कर एक शब्द–चित्र उपस्थित किया ळें

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न'

अति लधूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारतेन्दु जी की सबसे बड़ी विशेषता क्या मानी जाती है ?
उ0 – हिन्दी गद्य विद्या का प्रवर्तन तथा प्राचीन व नवीन का सामंजस्य।
2. **'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न'** निबन्ध किस कोटि का है ?
उ0 – हास्य व्यंग्य शैली में।
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को भारतेन्दु की उपाधि किसके द्वारा प्रदान की गई ?
उ0 देश की जनता द्वारा ।

4. भारतेन्दु जी ने पाठशाला को किसके समान बताया ?
उ0 कामधेनु के समान ।
5. पं0 शीलदावानल के शिष्य कौन–कौनसे बताए गए हैं ?
उ0 वेणु, बाणासुर, रावण, दुर्योधन, शिशुपाल और कंस को ।
6. भारतेन्दु जी द्वारा सम्पादित पत्रिकाओं के नाम लिखो ।
उ0 कवि वचनसुधा और हरिश्चन्द्र मैग्जीन।

लघूत्तरात्मक –

1. 'इस चपल जीव का क्षणभर भी भरोसा नहीं' भारतेन्दु जी के इस कथन का आशय बताइए।
उ0 भारतेन्दु जी के इस कथन का आशय है कि इस नश्वर संसार में जीवन का समापन कब हो जाए, इसलिए जीते–जी यशस्वी बनने का प्रयास करना चाहिए और सप्रयत्न सत्कर्म करने चाहिए।

2. पुस्तक लेखन के विचार पर लेखक क्यों सहम गया ?
उ0 लेखक ने सोचा कि पुस्तक बनते ही कीट–क्रिटिक (आलोचक) काटकर आधी से अधिक निगल जाएंगे और यश के स्थान पर शुद्ध अपयश प्राप्त होगा।
3. भारतेन्दु जी की उस अपूर्व पाठशाला के अध्यापक कौन–कौन थे ?
उ0 भारतेन्दु जी की उस अपूर्व पाठशाला में अनगिनत अध्यापक नियत किए गए परन्तु मुख्य केवल ये थे – पं0 मुग्धमणि शास्त्री, पाखण्डप्रिय धर्माधिकारी प्राणान्तक प्रसाद, लुप्त लोचन, शीलदावानल आदि।
4. 'सब तो एक तप्त तवे की बूंद पर बैठे हैं' कहने का क्या आशय है ?
उ0 इसका आशय है कि यह संसार क्षण–भंगुर है, इसमें कुछ भी स्थायी नहीं। जिस प्रकार गर्म तवे पर गिरने पर पानी की बूंद क्षणभर में नष्ट हो जाती है उसी प्रकार संसार में कालवश प्रत्येक वस्तु नष्ट हो जाती है।
5. 'यहां तो घर की केवल मूँछे–ही–मूँछे थी' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
उ0 भारतेन्दु जी ने पाठशाला के निर्माण का विचार किया उनके पास पाठशाला बनाने के लिए धन नहीं था मित्रों से सहायता मांगी। ईश्वर की कृपा से मित्रों से बहुत सारा धन प्राप्त हुआ। लेखक के पास तो पाठशाला बनाने का विचार ही था। उसको बनाने का कोई साधन नहीं था।
6. ज्योतिष विद्या के अध्यापक का संक्षिप्त में परिचय दीजिए।
उ0 ज्योतिष विद्या के अध्यापक हैं लुप्तलोचन ज्योतिषाभरण। ये प्रकाण्ड विद्वान हैं, कुशल ज्योतिषी थे। आकाश के नवीन तारे खोज लाएं हैं। इनको कुछ भी दिखाई नहीं देता तथा उन्होंने तामिश्र मकरालय नामक पुस्तक तथा अन्य अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

मुंशी प्रेमचन्द
कहानी – 'ईदगाह'

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –
1. हिन्दी जगत में मुंशी प्रेमचन्द किस नाम से मशहूर हैं ?
उ0 कलम के सिपाही।
2. मुंशी प्रेमचन्द की 'ईदगाह कहानी' किस पर आधारित है ?
उ0 बाल मनोविज्ञान पर।
3. हामिद की बूढ़ी दादी का क्या नाम था ?
उ0 अमीना
4. सम्मी ने कौनसा खिलाना खरीदा ?
उ0 खँजरी।
5. रंग जमाना मुहावरे का अर्थ लिखिए ।
उ0 प्रभाव जमाना।
6. 'वजू' शब्द का अर्थ है।
उ0 नमाज से पहले यथाविधि हाथ–पांव और मुँह धोना।
7. हामिद ने क्या खरीदा ?
उ0 चिमटा।

लघूत्तरात्मक –
1. हामिद के चरित्र की विशेषताएं बताइए ।
उ0 ईदगाह कहानी में बालक हामिद को इसमें मुख्य पात्र की भूमिका में चित्रित किया गया है। उनके चरित्र में अनेक विशेषताएं बताई गई हैं। जिनमें प्रमुख हैं – विवेकशील, सहनशील, वाक्पटु, भावुक–स्नेही व आशावान आदि।
2. ईदगाह कहानी का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

मिशन ग्यारह सौ 100

उ0 मुंशी प्रेमचन्द जी द्वारा लिखित कहानी ईदगाह में ग्रामीण परिवेश में त्योहार को मनाने की परम्परा के साथ बच्चों के उल्लास–उत्साह का वर्णन किया गया है। मुख्यरूप से ईद जैसे महत्वपूर्ण त्योहार को आधार मानकर मुस्लिम समाज के जीवन का सुन्दर चित्रण किया है। साथ ही हामिद की चारित्रिक विशेषताएं व्यक्त की गई हैं।

3. 'उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँख बदल ले तो ये सारी ईद मोहर्रम हो जावे।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ0 बच्चे गृहस्थी की चिन्ताओं से दूर होते हैं किन्तु जिस घर में सेवैयों के लिए दूध और शक्कर न हो उनको उधार लेने के लिए वे लोग गाँव के चौधरी कायम अली से उधार मांगते थे। बच्चों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि चौधरी यदि कर्ज देने से मना कर दे तो ईद न मना सकने से गाँव के गरीब लोगों की खुशी का माहौल मुहर्रम का सा दुःखपूर्ण हो जाएगा।

4. हामिद ने चिमटे के उपयोगिता को सिद्ध करते हुए क्या–क्या तर्क दिए ?

उ0 हामिद ने मेले से चिमटा खरीदा। इसकी उपयोगिता सिद्ध करते हुए निम्न तर्क दिए – कंधे पर रख लो तो चिमटा बंदूक हो जाएगा, हाथ में लेने पर फकीर का चिमटा हो जाएगा, मंजीरे के रूप में काम ले सकते हैं, आग में नहीं जलता रोटी सेकनें के काम आएगा, आँधी–तूफान में इसका कुछ भी नहीं होगा।

5. हामिद के हाथ में चिमटा देखकर अमीना की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उ0 हामिद के हाथ में चिमटा देखकर अमीना चौंकी, दोपहर तक इस लड़के ने न कुछ खाया, न पिया, बड़ा बेसमझा लड़का है। मगर जब हामिद ने कहा कि खाना बनाते समय तुम्हारी उंगलियां जल जाती हैं। यह सुनकर अमीना रोने लगी और दुआएं देने लगी।

6. 'ईदगाह' कहानी द्वारा प्रेमचंद ने क्या संदेश दिया है ?

उ0 ईदगाह कहानी में प्रेमचंद जी ने धर्म को भाईचारे और मेल कराने वाला बताया है। उन्होंने त्योंहार को प्रेम तथा भाईचारे से मनाने का संदेश दिया है। इसमें हामिद के चरित्र द्वारा बड़ों के प्रति प्रेम और आदर प्रकट करने, अपने उत्तरदायित्वों को निभाने तथा श्रमपूर्ण जीवन व्यतीत करने का संदेश भी दिया है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी
'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन'

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन निबन्ध द्विवेदी जी के किस निबन्ध संग्रह से लिया गया है ?

उ0 'महिला मोद' शीर्षक निबन्ध संग्रह से।

2. प्रथम बार सरस्वती पत्रिका में यह निबंध कब और किस नाम से प्रकाशित हुआ ?

उ0 सितम्बर 1914 में 'पढ़े लिखों का पांडित्य' शीर्षक से।

3. महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित पत्रिका का क्या नाम था ?

उ0 सरस्वती पत्रिका।

4. निबंध में रूक्मिणी–हरण की कथा कहां मिलती है ?

उ0 रूक्मिणी–हरण की कथा श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के उत्तार्द्ध के 53वें अध्याय में मिलता है।

5. पाठ में आए प्राचीन कालीन विदुषी महिलाओं के नाम लिखिए।

उ0 शीला, विज्जा, अनसूया, गार्गी, मैत्रेयी, भारती, सीता, रूक्मिणी, शकुन्तला आदि।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने का कुफल है' कथन में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उ0 लेखक ने इस कथन के द्वारा उन अहंकारी पुरूषों पर व्यंग्य किया है जो स्त्री शिक्षा के विरोधी हैं। यदि कोई सुशिक्षित एवं बुद्धिमती स्त्री तर्कों से किसी पुरूष को हरा देती है तो वे अपना अपमान मानते हैं। वे नहीं चाहते कि स्त्री शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो, वे इसे शिक्षा का दुराचार और कुफल मानते हैं। अपनी कमजारी के लिए स्त्रियों को दोष देते हैं।

2. द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में कौन–कौनसे तर्क दिए हैं ?

उ0 द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में अनेक तर्क दिए हैं। जैसे – प्राचीन काल में भी शिक्षा स्त्रियों के लिए थी। गार्गी मण्डन मिश्र की पत्नी, शीला, विज्जा आदि विदुषी स्त्रियां इसके प्रमाण हैं तथा संस्कृत नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ हाने के प्रमाण नहीं है तथा प्राचीनकाल में स्त्रियों ने वेद मंत्रों की रचना की इसलिए अहंकारी लोग स्त्री शिक्षा का विरोध गलत दृष्टि से कर रहें हैं।

3. ''स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है।'' इस कथन के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ0 लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्रस्तुत निबंध में यह बताने का प्रयास किया है कि जो लोग यह कहते हैं कि पुराने जमाने में यहां स्त्रियां न पढ़ती थी अथवा उन्हें पढ़ाने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जानबूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दण्डनीय हैं। अतः हमें स्त्रियों की शिक्षा का पूर्णरूप से समर्थन करना चाहिए।

4. शिक्षा–सुधार की दृष्टि से आप शिक्षा–प्रणाली में मुख्यरूप से क्या परिवर्तन करना चाहेंगे ?

उ0 शिक्षा–सुधार की दृष्टि से शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो नर–नारी को समान मानकर उन्हें उनकी रूचियों के अनुसार पढ़ने का अवसर दें। उसमें रोजगार के अवसर ही नहीं अपितु सदाचार, स्वावलम्बन, दायित्व बोध, सामाजिकता एवं नैतिकता का विकास हो। इसलिए शिक्षा पद्धति को समाज की जरूरतों के अनुरूप बनाया जावे।

5. शकुन्तला ने दुष्यंत से कटु वचन क्यों कहे थे ?
उ0 दुष्यंत ने शकुन्तला से गंधर्व विवाह किया था। बाद में उसे पहचानने से मना कर दिया। इसलिए शकुन्तला ने दुष्यंत से कटु वचन कहे।
6. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' शीर्षक निबंध में लेखक ने किस विषय पर विचार प्रकट किए हैं ?
उ0 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' शीर्षक निबंध में स्त्री शिक्षा का समर्थन किया है तथा विरोध को अनुचित बताया है।

लक्ष्मीनारायण रंगा
एकांकी 'अमर शहीद'

अति लघूत्तरात्मक

1. 'अमर शहीद' एकांकी के लेखक का नाम है ?
उ0 लक्ष्मीनारायण रंगा।

2. 'अमर शहीद' एकांकी का मुख्य पात्र कौन है ?
उ0 स्वतन्त्रता सेनानी सागरमल गोपा।
3. सागरमल गोपा द्वारा रचित पुस्तकें कौन–कौनसी थी ?
उ0 जैसलमेर राज्य गुण्डाराज। शासन व रघुनाथसिंह का मुकदमा।
4. सागरमल को जेल में जिंदा जला दिया गया था ?
उ0 03 अप्रैल 1946
5. ''स्वतन्त्रता के दीवानों को सहानुभूति की भीख नहीं चाहिए'' यह कथन किसने एवं किसको कहा ?
उ0 सागरमल गोपा ने जेलर से ।
6. 'पूर्णाहुति होना' मुहावरे का अर्थ है ?
उ0 कठिन कार्य पूरा हो जाना।
7. नजराना एवं पीवणा शब्द का अर्थ ?
उ0 कर, उपहार, भेंट/साँप की एक प्रजाति।
8. जेलर का क्या नाम है ?
उ0 जैसलमेर जेल के जेलर का नाम करणीदान था।
9. 'नमक हराम' मुहावरे का अर्थ है ।
उ0 कर्त्तव्य का पालन न करना।
10. ''हमें चाहिए स्वतन्त्रता .... सिर्फ स्वतन्त्रता'' यह कथन किसने एवं किससे कहे ?
उ0 सागरमल गोपा ने जेलर करणीदान से।

लघूत्तरात्मक

1. 'अमर शहीद' एकांकी का मूल भाव एवं उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।
उ0 अमर शहीद एकांकी में राजस्थान में स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रेरणास्त्रोत वीर शिरोमणि सागरमल गोपा द्वारा मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए प्राण न्योछावर करने की यशोगाथा है। इसका मूल भाव स्वतन्त्रता सेनानियों के साहस, शौर्य, व्याग, देश–प्रेम तथा कष्ट–सहिष्णुता का परिचय देकर बलिदान के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है।
2. 'अमर शहीद' एकांकी के आधार पर सागरमल गोपा की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
उ0 अमर शहीद एकांकी में देशभक्त सागरमल गोपा की प्रमुख विशेषताएं निम्न हैं– 1. साहसी एवं सहनशील 2. देशभक्त 3. स्वाभिमानी 4. लोभ एवं लालचरहित 5. बलिदानी 6. दृढ़–निश्चयी
3. सागरमल गोपा ने महारावल के अत्याचारों को लेकर किनसे पत्राचार करने का आरोप लगाया ?
उ0 सागरमल गोपा ने जैसलमेर के महारावल जवाहरसिंह के अत्याचारों को लेकर अंग्रेज रेजीडेण्ट एलिंगटन तथा राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता पं0 जवाहर लाल नेहरू, जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री को गुप्त पत्र भेजने का आरोप लगाया।
4. 'मातृभूमि के दीवने तन का जीवन नहीं मन का जीवन जीते हैं''
पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।
उ0 जब जेलर ने सागरमल गोपा से कहा कि ये तेरे पाँव तोड़ देंगे, तेरे हाथ तोड़ देंगे, तुम्हारे प्राण ले लेंगे। तभी सागरमल गोपा ने कहा कि देशभक्त शरीर से नहीं अपनी मातृभूमि से प्रेम करता है, हाथ–पैर टूटने से मातृभूमि को आजादी मिले तो सब सहनीय है। हम मातृभूमि के दीवने मन से जीते हैं और हमारा मन मातृभूमि के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने में दृढ़ संकल्पयुक्त है।

मोहन राकेश
'आखिरी चट्टान'

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि' किसे कहा गया है ?
उ0 कन्याकुमारी को।
2. आखिरी चट्टान किस विधा की रचना है ?
उ0 यात्रा संस्मरण।
3. मोहन राकेश अपने हस्तलिखित पन्ने कहाँ छोड़ आए थे ?
उ0 कनानोर में।
4. 'आखिरी चट्टान' की तरफ जा रही मिशनरी युवतियाँ किस समस्या पर विचार कर रही थी ?
उ0 मोक्ष की समस्या पर।
5. 'कडलकाकों' शब्द का शाब्दिक अर्थ है ?
उ0 समुद्री पक्षी।
6. कन्याकुमारी में किन–किन सागरों का संगम होता है ?
उ0 कन्याकुमारी में अरब सागर, हिन्द महासागर, बंगाल की खाड़ी इन तीनों सागरों का संगम होता है।
7. मोहन राकेश ने किस पत्रिका का सम्पादन किया ?
उ0 सारिका पत्रिका का।
8. वह कौनसा स्थाना है जहां सूर्योदय और सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य दिखता है ?
उ0 सैण्डहिल से।

9. 'आखिरी चट्टान' यात्रावृत में लेखक ने किसके भव्य सौन्दर्य का वर्णन किया है ?
उ0 कन्याकुमारी और उसके समीपवर्ती सागर तट के भव्य सौन्दर्य का।
10. विवेकानन्द ने कहाँ समाधि लगाई थी ?
उ0 विवेकानन्द ने कन्याकुमारी के संगम–स्थल में स्थित चट्टान पर समाधि लगाई थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सूर्यास्त के बाद लेखक के मन में क्या डर समाया ?
उ0 सूर्यास्त होने पर समुद्र तट पर अँधेरा फैलने लगा लेखक जिस टीले पर था वहां से अनेक रेतीले टीलों को पारकर वापस लौटना था। लेखक को भय हुआ कि इन टीलों को पार करने से पूर्व ही अँधेरा हो जाएगा और रेतीले टीलों में ही भटकता रह जाएगा, उसे रास्ता नहीं मिलेगा। इसलिए मन में डर समाया।
2. मन बहुत बैचेन था .... लग रहा था कि वहां से तुरन्त लौट जाना पड़ेगा। स्पष्ट कीजिए।
उ0 लेखक कन्याकुमारी में हिन्दमहासागर की लहरों को देख रहा था कि वहां के सुरम्य वातावरण एवं प्राकृतिक परिवेश को निहारने के लिए कई सप्ताह वहीं पर रहूँ परन्तु अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण वह कनानोर के होटल में अपने हस्तलिखित अस्सी–नब्बे पन्ने मेज की दराज में ही छोड़ आया था इसलिए तुरन्त कनानोर जाना चाहता था इस कारण वह बहुत बैचेन था कागजों के सुरक्षित मिल जाने की आशा में वह तुरन्त ही वहां से लौटने की सोच रहा था।
3. 'मन में केवल हिन्दसों की चरखी चलती रही' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उ0 एक कान्वेण्ट की बस होटल के आहते में आकर रूकी उसमें बैठी लड़कियां समुद्र के सितारे को लक्ष्य कर अंग्रेजी में एक गीत गा रही थी। उस समय लेखक का मन एक ओर तो गीत सुनने में लगा हुआ था दूसरी ओर उसे सुबह की बस से जाना था अतः सोच रहा था कि पहली बस से दूसरी बस, तीसरी बस का समय क्या–क्या है। जब गीत के स्वर विलीन हो गए तब उसके मन में बसों के समय चक्र की ही चरखी चलती रही।
4. मैं अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था, शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति प्रस्तुत कथन के आशय को स्पष्ट कीजिए ।
उ0 लेखक कन्याकुमारी और उसके समीपवर्ती सागर तट का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सागर के अन्दर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर मैं खड़ा हुआ देर तक भारत के स्थल भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। उस चट्टान से सागर की ऊँची–ऊँची लहरें टकरा रही थी वे बल खाती हुई लहरें पहले रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थी जिससे उनके ऊपर चूरा बूंदों की जालियां बन जाती है। इस दृश्य को देखकर लेखक ने कहा कि शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।
5. 'पहले जहां सोना वहां अब लहू बहता नजर आने लगा' में क्या भाव निहित है स्पष्ट कीजिए ?
उ0 जब सूर्य के गोले की जलराशि की सतह को स्पर्श किया तो जल सुनहरा हो गया ऐसा लग रहा था कि पानी में सोना घोल दिया हो परन्तु पानी का रंग बार–बार तथा जल्दी–जल्दी बदल रहा था। पहले उसका रंग सुनहरा था तो कुछ ही समय बाद उसका रंग रक्त के रंग जैसा लाल हो गया।
6. 'आखिरी चट्टान' यात्रावृत्त की शैलीगत विशेषताएं बताइए।
उ0 आखिरी चट्टान यात्रावृत्त की भाषा इतनी पारदर्शी है लेखक के अनुभव पाठक के अनुभव में रूपान्तरित होने लगते हैं। इसके अलावा भाषा सरल और सजीव, शैली वर्णनात्मक तथा चित्रात्मक के साथ सूर्योदय और सूर्यास्त का सजीव चित्रांकन किया गया है।

रामधारी सिंह दिनकर
'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से'

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. रामधारी सिंह दिनकर की प्रमुख रचना 'उर्वशी' को कौनसा पुरस्कार मिला?
उ0 भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।
2. 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' निबन्ध दिनकर की किस पुस्तक से संकलित है ?
उ0 अर्द्धनारीश्वर रचना से।
3. ईर्ष्या की बेटी का क्या नाम है ?
उ0 ईर्ष्या की बेटी का नाम निन्दा है।
4. लेखक ने ईर्ष्या से बचने का क्या उपाय बताया है ?
उ0 मानसिक अनुशासन।
5. 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है' यह किस महापुरूष का कथन है ?
उ0 यह कथन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का है।
6. ईर्ष्या सबसे पहले किसको जलाती है ?
उ0 जिसके हृदय में उसका जन्म होता है।
7. 'ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है' लेखक ने ईर्ष्या का अनोखा वरदान क्या बताया है ?
उ0 आपसी होड़ अथवा प्रतिस्पर्धा।
8. चिन्ता और चिता में क्या अन्तर बताया गया है ?
उ0 चिन्ता व्यक्ति के हृदय को जलाकर उसके मौलिक गुणों को दबा देती है जबकि चिता शरीर को भस्म कर देती है।
9. ईर्ष्या किस रूप में हमारे विकास का कारण बन सकती है ?
उ0 रचनात्मक प्रतिबद्धता का भाव रखने तथा कार्य करने की होड़ रखने में ईर्ष्या हमारे विकास का कारण बन जाती है।
10. नीत्से ने ईर्ष्यालु लोगों के जलने का क्या कारण बताया है ?
उ0 नीत्से ने व्यक्ति की प्रगति एवं गुणों के आकर्षण को ईर्ष्यालु लोगों के जलने का कारण बताया है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. ईर्ष्यालु लोगों से बचने के लिए नीत्से ने क्या उपाय सुझाया है ?
उ0 ईष्यालु लोगों से बचने के लिए निम्न उपाय सुझाए हैं –
    1. प्रत्येक कार्य को उद्यम की भावना से करो।
    2. ईर्ष्यालु व्यक्ति से दूर रहना।
    3. यश की ईच्छा न करना।
    4. जीवन मूल्यों का निर्माण करना।

2. 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।' कथन को स्पष्ट कीजिए।
उ0 ईश्वरचन्द विद्यासागर के इस कथन से सिद्ध होता है कि तुम जिस व्यक्ति की भलाई करोगे वही तुम्हारी निन्दा करेगा क्योंकि सम्बन्धित व्यक्ति तुम्हारा सामिप्य प्राप्त कर तुम्हारे बारे में सब कुछ जान लेगा और उसके मन से तुम्हारे व्यक्तित्व का प्रभाव समाप्त हो जाएगा जो दूसरों के मन में अभी तक पड़ा हुआ है। परिणामस्वरूप तुमसे काम निकल जाने के बाद वह स्वयं तुम्हारी निन्दा करने लगेगा, काम पड़ने पर प्रशंसा करेगा, काम बन जाने पर या पीठ पीछे वह निन्दा करता रहेगा।
3. लेखक ने ईष्यालु व्यक्ति के क्या लक्षण बताए हैं ?
उ0 ईर्ष्यालु व्यक्ति उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता है जो उसके पास हैं अपितु उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों से कर अपने पक्ष के सभी अभावों को लेकर बहुत व्यथित हो जाता है वह आदत से लाचार रहता है। ईर्ष्या के दंश एवं वेदना से अकारणग्रस्त रहा है। अपनी उन्नति के लिए उद्यम प्रयास न कर दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य मानता है।
4. पाठ 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' के अनुसार मनुष्य की उन्नति कब सम्भव है ?
उ0 मनुष्य की उन्नति तब सम्भव है जब वह अपने अभावों को जाने तथा उसकी पूर्ति रचनात्मक तरीके से करे।
5. चिन्तादग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र क्यों है ?
उ0 चिन्तादग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र इसलिए है क्योंकि समाज की दया से वह चिन्ता से बच सकता है।

6. ईर्ष्यालु मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है ?
उ0 निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधना और दूसरों पर हँसना ही ईर्ष्यालु मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

मिशन श्रेष्ठाकी 100

रामवक्ष

'लोक संत दादूदयाल'

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. जनगोपाल की 'परची' के अनुसार दादू के गुरु कौन थे ?
उ0 जनगोपाल की 'परची' के अनुसार दादू के ग ुरू बुड्ढन थे।
2. दादूदयाल की साधना भूमि किस को माना जाता है ?
उ0 राजस्थान को।
3. दादूदयाल का जन्म कब हुआ था ?
उ0 दादूदयाल का जन्म फागुल सुदी अष्टमी बृहस्पतिवार सम्वत् 1601 (सन् 1544) को हुआ माना जाता है।
4. दादूदयालय का लालन–पालन किसने किया था ?
उ0 लोदीराम नामक नागर ब्राह्मण और बसीबाई ने ।
5. दादूदयाल ने अपनी इहलीला कहाँ समाप्त की थी ?
उ0 नाराणा (राजस्थान) ।
6. दादूदयाल ने किस सम्प्रदाय की संस्थापना की थी ?
उ0 'पर ब्रह्म सम्प्रदाय' की स्थापना की।
7. दादू ने अपने शिष्यों को क्या उपदेश दिया ?
उ0 परनिन्दा न करने का ।
8. 'सिरजनहार' शब्द का अर्थ है ?
उ0 निर्माण करने वाला।
9. दादू को मध्यकालीन किस परम्परा का सन्त माना जाता है ?
उ0 दादू को मध्यकालीन निर्गुण भक्ति परम्परा का सन्त माना जाता है।
10. दादूदयाल की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने उनके सम्प्रदाय का क्या नाम रखा ?
उ0 दादू पंथ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'दादू खोल' से क्या आशय है ?
उ0 दादूदयाल के देहान्त के बाद उनके शव को उनकी ईच्छा के अनुसार भैराणा की एक पहाड़ी पर स्थित गुफा में रखा गया वहीं पर दादू को समाधी दी गई। इस पहाड़ी को अब दादू खोल कहा जाता है।
2. दादू की गुरू परम्परा के बारे में क्या मान्यता है ?
उ0 दादू पंथियों के अनुसार दादू के गुरू बुड्ढन एक अज्ञात संत थे। दादू के प्रमुख शिष्य गरीब दास, रज्जब, सुन्दरदास आदि थे। दादू ने परब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना की थी। इसे अब दादू पंथ कहा जाता है।
3. दादू के अपने शिष्य को क्या शिक्षा दी ?
उ0 दादू ने अपने शिष्यों को जात–पाँत के आधार पर मनुष्यों में भेद न करने तथा निन्दा–स्तुति को समान भाव ग्रहण करने के साथ अहंकार का त्याग, संतोषी जीवन जीने की शिक्षा दी।

4. दादू ने अपनी जाति क्या बताई थी ?
उ0 दादू को समाज प्रचलित जात–पाँत में कोई विश्वास नहीं था। लोगों द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा उनकी जाति जगतगुरू (ईश्वर) है।
5. दादूदयाल निर्गुण परम्परा के सन्त होकर कबीर से किस कारण भिन्न माने गए ?
उ0 निर्गुण परम्परा के सन्तों में कबीर का स्थान सर्वप्रमुख है। जहां कबीर ने जाति–पाँति एवं आडम्बरों को लेकर खण्डन–मण्डन की शैली अपनायी और प्रखर शब्दों में आचरण की पवित्रता के उपदेश दिए परन्तु दादूदयाल ने खण्डन–मुण्डन की प्रवृत्ति नहीं अपनायी। उन्होंने अपने आध्यात्मिक उपदेशों में साधना को विशेष महत्व दिया तथा प्रेम–व्यवहार का महत्व बताया।

मिशन कोचिंग 100

लोक संत पीपा

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. संत पीपा का जन्म कब एवं कहा हुआ था ?
उ0 संत पीपा का जन्म खींची चौहान राजवंश में विक्रम सम्वत् 1390 के आस–पास झालावाड़ जिले के गागरौन नामक स्थान पर हुआ माना जाता है।
2. संत पीपा की पत्नी का नाम क्या था ?
उ0 संत पीपा की पत्नी का नाम सीता था।

3. यदि मध्यकाल में कबीरदास न होते तो अन्धविश्वासी एवं ढोंगी लोग सच्ची भक्ति को रसातल में पहुँचा देते। यह कथन था ?
उ0 संत पीपा का।
4. 'राम नाम सुमिरण एवं राम राम ही सर्वोपरि है' । उक्त कथन किसने कहा?
उ0 स्वामी रामानन्द के द्वारा पीपा को ।
5. संत पीपा किसके घोर विरोधी और निन्दक थे ?
उ0 सन्त पीपा हिंसा और माँस भक्षण के घोर विरोधी थे।
6. संत पीपा ने अपने अनुयायियों को क्या उपदेश दिया ?
उ0 संत पीपा ने निर्गुण निराकार ब्रह्म का उपदेश दिया।
7. भव सागर एवं पंचतत्व शब्द का शाब्दिक अर्थ बताइए ?
उ0 भव सागर – संसार सागर, पंचतत्व–पृथ्वी, जल, वायु अग्नि, आकाश।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'एकै मारग ते सब आया। एकै मारग जाहीं।' संत पीपा के इस कथन में किस सत्य का उद्घाटन हुआ है ?
उ0 संत पीपा ने कहा कि संसार के सभी प्राणी परमात्मा की सन्तान है। उनमें कोई भेद नहीं परमात्मा की ईच्छा से ही सब इस संसार में जन्म लेते है तथा बाद में उसी में लीन हो जाते है परमात्मा ही सबके माता–पिता है इसलिए मानव में भेद नहीं करना चाहिए, दोनों समान हैं।

2. 'जो ब्रह्मण्डे साई पिण्डे' संत पीपा ने इन शब्दों में किस दार्शनिक सिद्धान्त का उल्लेख किया है ?
उ0 संत पीपा मानते हैं कि आत्मा और परमात्मा एक ही है इससे उन्होंने अद्वैतवाद की भावना व्यक्त की है तथा उनका मानना है वह ब्रह्माण्ड में स्थित परमात्मा का ही रूप है।
3. राजस्थान के लोक सन्तों में सन्त पीपा का महत्व बताइए ?
उ0 राजस्थान के लोक संतों में पीपा का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। वे एक समाज सुधारक एवं निर्गुण भक्ति की दृष्टि से विशिष्ट है। इन्होंने कर्मनिष्ठा और भक्ति भावना को लोकवाणी में अभिव्यक्ति दी तथा सर्वत्र धूमकर सामाजिक जागृति फैलायी, जनता में समाज सुधार की चेतना का विकास हुआ।
4. संत पीपा ने अपनी भक्ति भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग को किस प्रकार दृढ़ बनाया ?
उ0 संत पीपा ने अपनी भक्ति भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग के हृदय में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भता, हिम्मत, दृढ़ निश्चय आदि जाग्रत करते हुए समाज को रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों से मुक्त रहने का उपदेश दिया सम्पूर्ण वैभव त्यागकर समाज सुधार और निर्गुण भक्ति भावना के प्रचार में लगा दिया, हिंसा का विरोध व आचरण की पवित्रता पर बल दिया।

सड़क सुरक्षा

1. प्रशिक्षु लाइसेंस कितने समय तक के लिए वैध होता है ?
उ0 प्रशिक्षु लाइसेंस 6 महिने ते के लिए वैध होता है।
2. सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित आपके कोई चार कर्त्तव्य लिखिए ?
उ0 सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित हमारे चार कर्त्तव्य निम्न प्रकार हैं –
   1. दुर्घटना होने पर घायलों की मदद करना।
   2. यातायात नियमों का पालन करना।
   3. जब तक गाड़ी चलाने का लाइसेंस न मिले तब तक गाड़ी न चलाना।
   4. यातायात के नियमों का प्रचार–प्रसार करना।
3. एमएसीटी एक्ट 1989 के निर्देश क्या थे (कोई दो) लिखिए।

उ0 1. दुर्घटना के दौरान किसी की जीवन रक्षा के लिए कोई कानूनी अड़चन नहीं हो सकती।
2. सहायता करने वाले से पुलिस किसी प्रकार का प्रश्न नहीं कर सकेगी।

ईदगाह

1. ईदगाह कहानी है ?
उ0 बाल मनोविज्ञान आधारित।
2. 'ईदगाह' कहानी में बालकों की प्रसन्नता का कारण क्या है ?
उ0 ईद के त्योंहार पर मेला देखने जाने के कारण।
3. 'ईदगाह' कहानी के प्रमुख पात्र हामिद के पास कितने पैसे थे ?
उ0 तीन पैसे।
4. बालकों ने मेले में क्या–क्या खरीदा ?
उ0 सिपाही, भिश्ती, खिलौने व मिठाइयां।
5. मेले में बालक किन–किन विषयों पर चर्चा करते हैं ?
उ0 पुलिस पर, जिन्नात पर और एक–दूसरे को चिढ़ाते हैं।
6. हामिद ने मेले में चिमटा ही क्यों खरीदा ?
उ0 अपनी बूढी दादी की तकलीफों का ध्यान रखकर और अपने मन पर नियन्त्रण रखकर मिठाइयां, खिलौने न खरीदकर चिमटा खरीदा।
7. हामिद के चिमटा खरीदने पर अन्य बालकों की क्या प्रतिक्रिया रही ?
उ0 वे उसका उपहास उड़ाने लगे पर तर्क के आधार पर हामिद भारी रहा तो एक–एक करके उसके पक्ष में जाने लगे।
8. हादिम का चरित्र किस प्रकार का था ?
उ0 बाल मनोविज्ञान पर आधारित, मानवीय संवेदन युक्त विवेकशील, दयालु, सहनशील।

निबन्धात्मक प्रश्न –
1. 'ईदगाह' कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित अत्यन्त प्रेरणादायी है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न

1. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' किस प्रकार की विधा है ?
उ0 काल्पनिक व्यंग्यात्मक निबंध ।

2. तत्कालीन समाज में व्याप्त प्रवृतियां जो समाज हित में नहीं थी, उनका उल्लेख कीजिए।
उ0 धर्मान्धता, स्वार्थपरता, पाखण्ड व दिखावे की प्रवृति।
3. उस समय शिक्षा का स्तर कैसा था व किसकी देख–रेख में था ?
उ0 शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों के हाथ में थी, अंग्रेज सरकार शिक्षा को लेकर नये–नये प्रयोग कर रही थी ।
4. भारतेन्दु जी ने भारतीय समाज की दुदर्शा का जिम्मेदार किसको माना ?
उ0 तत्कालीन शिक्षा पद्धति, अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीति व भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयां।
5. भारतेन्दु जी ने कौनसा स्वप्न देखा ?
उ0 एक अपूर्व पाठशाला खोलने का।
6. भारतेन्दु जी ने पाठशाला खोलने का निश्चय क्यों किया ?
उ0 अंग्रेजी शिक्षा के दुष्परिणामों व अंग्रेज सिर्फ अपना हित साधने वाले हैं यह बात वे जानते थे।
7. भारतेन्दु जी ने तत्कालीन शिक्षा पद्धति की खिल्ली किस प्रकार उड़ाई ?
उ0 उन्होंने अपनी उलट–पुलट कल्पना के माध्यम से तत्कालीन शिक्षा में व्याप्त अराजकता को लक्ष्य कर पाठशाला में सब कुछ हास्यस्पद रख उस शिक्षा प्रणाली की खिल्ली उड़ाई।

निबन्धात्मक प्रश्न –
1. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध में भारतेन्दु जी ने तत्कालीन समाज की शिक्षा पद्धति पर करारा व्यंग्य किया है। किस प्रकार ? स्पष्ट कीजिए।

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से

1. रामधारी सिंह दिनकर ने ईर्ष्या का अनोखा वरदान किसे कहा है ?
उ0 प्रतिद्वन्दिता की भावना को, क्योंकि प्रतिस्पर्धा से व्यक्ति स्वयं का विकास भी कर पाता है।
2. दिनकर जी के अनुसार निन्दा कौन लोग करते हैं ?

मिशन शिक्षा 100

उ0 दिनकर जी ने अनुसार निन्दा वही करते हैं, जिनकी आपने भलाई की है।

3. लेखक ने जहर की चलती–फिरती गठरी किसे कहा है ?

उ0 चिन्ता व ईर्ष्या से दग्ध ईर्ष्यालु व्यक्ति को।

4. ईर्ष्या किस प्रकार का दुर्भाव है ?

उ0 ईर्ष्या इस प्रकार का दुर्भाव है कि इससे ग्रस्त व्यक्ति की निन्दा कर उसका स्थान व प्रतिष्ठा स्वयं पाना चाहता है इसके लिए अपनी अच्छाइयों को भी भूल जाता है।

5. ईर्ष्यालु व्यक्ति का प्रमुख दोष क्या माना गया है ?

उ0 अकारण ही दूसरों से जलना, समय–बेसमय निन्दा करना, स्वार्थ या श्रेष्ठ दिखने हेतु दूसरों में दोष निकालना।

6. ईर्ष्या से बचने के उपायों पर सुझाव दीजिए।

उ0 मानसिक अनुशासन, लोभ, लालच, कामना, परनिन्दा, निरर्थक बातों पर नियन्त्रण, श्रेष्ठ मानवीय गुणों का निर्माण, ईर्ष्यालु व चापलूसों से दूरी व सुयश व सम्मान की कामना नहीं।

7. ईर्ष्या से बचने का नीत्से का दृष्टिकोण लिखिए ।

उ0 बाजार की मक्खियों से दूर एकान्त में रहकर एवं जो अमर व महान है उसकी रचना, निर्माण कर सुयश से दूर रहकर ईर्ष्या से बचा जा सकता है।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. लेखक रामधारी सिंह दिनकर के 'ईर्ष्या' विषयक विचारों को स्पष्ट कीजिए व इससे बचने के उपाय बताइए।

दादूदयाल

1. संत दादूदयाल का जन्म कहाँ हुआ व वे राजस्थान में कब व कहाँ आए ?

उ0 दादूदयाल का जन्म अहमदाबाद में हुआ, वे तीस वर्ष की आयु में राजस्थान के सांभर में आकर रहने लगे।

2. दादू द्वारा स्थापित सम्प्रदाय कौनसा था ?

उ0 'परब्रह्म सम्प्रदाय' जिसका वर्तमान नाम 'दादूपंथ' है।

3. परनिन्दा के विषय में दादू के विचार लिखिए ?

उ0 दादू ने कहा कि दूसरों की बुराई से प्रभु राम की भक्ति नहीं कर पाते हैं इसलिए परनिन्दा नहीं करनी चाहिए।

4. दादू की प्रमुख शिक्षा क्या थी ?

उ0 पवित्र आचरण, प्रेम भाव, परनिन्दा नहीं, अभिमान नहीं, निष्कामी व सदैव ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए।

5. दादू की निर्गुण भक्ति व अन्य संतों से भिन्न किस प्रकार से थी ?

उ0 अन्य – जाति–पांति व आडम्बरों का खण्डन–मण्डन।
दादू – आध्यात्मिक उपदेशों से साधना व मानवतावादी प्रेम व्यवहार व लोक पक्ष को महत्व।

6. दादू के जीवन चरित्र की विशेषताएं बताइए।

उ0 जाति–पांति का भेदभाव नहीं, परनिन्दा नहीं, सदैव मानव कल्याण, शान्त रहकर सहज प्रेम व्यवहार, दिखावे से दूरी आदि।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. संत दादू दयाल के जीवन चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि वे किस प्रकार से समाज के हित में थी?

चुनिंदा शब्दावली

हिंदी भाषा में लेखन और अभिव्यक्ति को सशक्त और प्रभावशाली बनाने में प्रयुक्त किये जाने वाले शब्दों की बड़ी भूमिका होती है। हम रोजमर्रा में बहुधा जिन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं उन्हें लेखन में शामिल करने से भी भाषा सजीव, रोचक और सरल बन जाती है। ऐसे ही कुछ शब्दों को एक जगह रखने का प्रयास किया गया है।

- अंगीकार– स्वीकार, मंजूर, ग्रहण
- अंतरंग– भीतरी, अत्यंत समीपीधनिकटस्थ, घनिष्ठ, आत्मीय, अंतःकरण का, मानसिक (अंर्तअंग)
- अधीर– धैर्यरहित, उद्विग्न, खिन्न, व्याकुल, बेचैन, विह्वल, अप्रसन्न, कातर, आकुल।
- अध्येता– अध्ययन करने वाला, पाठक, छात्र।
- अनधिकार– जिस पर अधिकार न हो, प्रभुत्व न होना, बेबसी, लाचारी।
- अनागत– अनुपस्थित, न आया हुआ।
- अनादर– निरादर, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।
- अनाश्रित– निरवलम्ब(र्निअवलंब), बेसहारा, निराश्रय।

- अनासक्त– किसी विषय पर आसक्त न होने वाला, निर्लेप।
- अनाहूत– जिसे बुलाया न गया हो, अनिमंत्रित।
- अनिंद्य– जो निंदा के योग्य न हो, निर्दोष।
- अनवरत– लगातार, सतत, निरंतर, हमेशा।
- अंतर्दृष्टि– प्रज्ञा, बुद्धि, इल्म, आंतरिक ज्ञान, अंतर्ज्ञान, एकाग्रता, मेधा, समझ।
- अकथनीय– न कहने योग्य, अवर्णनीय, अनिर्वचनीय।
- अकर्मण्य– आलसी, काम न करने वाला।
- अकिंचन– गरीब, निर्धन, दरिद्र, कंगाल।
- अक्षुण्ण– एक, न टूटा हुआ, सारा, समस्त।
- अगणित– जिसे गिना न जा सके, बेशुमार, सामान्य।
- अतुल्य– अनुपम, बेजोड़, असमान।
- अथक– बिना थके।
- अदावत– दुश्मनी, बैर, शत्रुता, विरोध।
- अद्यतन– अब तक का, अंग्रेजी में अपडेट।
- आगाह– जानकार, वाकिफ, सचेत, सावधान।
- आतिथ्य–मेहमाननवाजी, अतिथि का सत्कार।
- आत्मगौरव– अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान रखना, आत्मसम्मान।
- आनुषंगिक– किसी बड़े कार्य के साथ थोड़े प्रयास में सधने वाला कार्य, प्रासंगिक।
- आबरू– इज्जत, प्रतिष्ठा, बड्डपन, मान, मर्यादा।
- आबाद– बसा हुआ।
- आभ्यंतर– भीतरी, आंतरिक।
- आभिजात्य– कुलीनों के गुणध्लक्षण, कुल–संस्कार, कुलीनता।
- आमुख– प्रस्तावना या भूमिका।
- आदाब– कायदा, लिहाज, मान, नमस्कार, सलाम।
- आरजू– इच्छा, कामना, वाञ्छा, अनुनय, विनय, विनती, आग्रह, प्रार्थना, इल्तजा, मिन्नत।
- आरूढ़– सवार, चढ़ा हुआ।
- आरोग्य– स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती, नीरोग, स्वस्थ रहने का भाव।
- आरोह– ऊपर की तरफ चढ़ना।
- आर्तनादध्आर्तस्वर– दुःखसूचक शब्द, करुण पुकार, क्रंदन।
- आलंबन– सहारा, आश्रय, अवलंब।
- आविर्भूत– प्रकाशित, प्रकट, उत्पन्न, उदित।
- आसन्न– निकट आया हुआ, प्राप्त, उपस्थित।
- आह्लाद– आनंद, हर्ष, प्रसन्नता।
- आह्वान– बुलावा, पुकार।
- इंतखाब– चुनाव, निर्वाचन, पसंद।
- इंतहा– चरम सीमा, हद, अंत, समाप्ति, परिणाम, फल।
- इकराम– पारितोषिक, इज्जत, आदर, इनाम।
- इकरार– प्रतिज्ञा, करार, वादा।
- इजहार– जाहिर करना, प्रकाशन, प्रकटीकरण, गवाही, सत्य।
- इतर– दूसरा, अन्य, अपर।
- इतरेतर– परस्पर, एक–दूसरे के साथ।
- इत्तेफाक– मेल–मिलाप, एका, सहमति, संयोग, मौका, अवसर।
- इत्तला– सूचना, खबर।

- इनायत– कृपा, दया, अनुग्रह, एहसान।
- इम्तहान– परीक्षा, जाँच।
- इरशाद– आज्ञा, हुक्म, फरमान, आदेश।
- इल्जाम– अपराध, अभियोग, दोषारोपण, दोष, आरोप।
- इसरार– हठ, जिद्द, कुतर्क।
- उऋण– ऋण से मुक्त, जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।
- उत्कंठा– प्रबल इच्छा, तीव्र अभिलाषा।

- उत्कट– तीव्र, विकट, उग्र।
- उत्कर्ष– समृद्धि, उन्नति, अधिकता, श्रेष्ठता, उत्तमता, बड़ाई।
- उत्कीर्ण– लिखा हुआ, खुदा हुआ।
- उत्कृष्ट– उत्तम, श्रेष्ठ, सबसे भला।
- उत्क्षिप्त– फेंका हुआ, हटाया हुआ, उछाला हुआ।
- उत्सर्ग– त्याग, बलिदान, न्योछावर, छोड़ना।
- उदात्त– श्रेष्ठ,बड़ा, समर्थ, योग्य।
- उद्दाम– बंधनरहित, स्वतंत्र,महान, गंभीर, निरंकुश, उग्र।
- उद्धार– मुक्ति, छुटकारा, निस्तारण, उन्नति, समृद्धि।
- उद्यत– तैयार, तत्पर,सन्नद्ध, प्रस्तुत, मुस्तैद, उठाया हुआ।
- उद्यम– प्रयत्न, प्रयास, उद्योग, मेहनत, कामधंधा, रोजगार।
- उद्वेग– बेचौनी, घबराहट, आवेश, जोश, तरंग।
- उपकार– हितसाधन, भलाई, नेकी, लाभ, फायदा।
- उपदेश– सीख, नसीहत, शिक्षा,गुरुमंत्र।
- उपसंहार– समाप्ति, खातमा, संहरण, परिहार।
- उपार्जित– कमाया हुआ, परिश्रम से प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ।
- उपालम्भ– उलाहना, शिकायत, राजस्थानी में ओळमा।
- उपेक्षा– उदासीनता, लापरवाही, विरक्ति, तिरस्कार, अवहेलना, परित्याग।
- उम्दा– श्रेष्ठ, विशिष्ट, भला।
- उलफत– प्रेम, आशनाई, वफा, प्यार।
- उल्था–एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण या अनुवाद, भाषान्तर, अनुवाद, तरजुमा।
- उसूल– सिद्धांत।
- ऊर्जस्वित– ऊपर की ओर चढ़ा हुआ, बहुत बढ़ा हुआ।
- ऊर्जस्वी–बलवान, शक्तिशाली, तेजवान, प्रतापी।
- एकाग्र– एक तरफ स्थिर, निरत, एकरत, एक में लीन, जिसका ध्यान एक तरफ लगा हो।
- एहतियात– सावधानी, ख्याली, होशियारी, परहेज।
- ऐक्य– एकत्व, एकता का भाव, एका, मेल, एक राय, एकता।
- ऐच्छिक– इच्छानुसार, जो अपनी इच्छा पर हो।
- ऐब– दोष, खोट, नुक्स, अवगुण, कलंक।
- ओजस्वी– शक्तिवान, प्रभावशाली।
- ओहदा– पद, स्थान।
- औचक– अचानक, एकाएक, सहसा।
- कथोपकथन– आपस में वार्तालाप, बातचीत, वर्णन।

- कपोलकल्पना–मनगढ़ंत बात, बनावटी बात, गप्प।

मिशन ब्यूरोक्रेसी 100

- करीम– कृपालु, दयालु।
- कर्मण्य– खूब काम करने वाला, उद्योगी, प्रत्यनशील, कुशल, दक्ष, चतुर।
- कवायद– अभ्यास, नियम, व्यवस्था।
- कशिश– आकर्षण,खिंचाव।
- काबिलियत– योग्यता, पांडित्य, विद्वता, लियाकत।
- कारगर– प्रभावजनक, असरकारक, उपयोगी।
- कारुणिक– दयालु, कृपालु।
- किंकर्तव्यविमूढ़–जिसे ये न सूझे कि अब क्या करें क्या न करें। हक्का–बक्का, भौंचक्का।
- किफायत– कमखर्ची, संभलकर खर्च करना।
- कीर्तिमान– यशस्वी, नेकनाम, मशहूर, विख्यात।
- किस्मत–भाग्य,तकदीर, नसीब।
- कुसाइत– बुरा मुहूर्त, बुरी साइत, कुसमय,अनुपयुक्त समय।
- कृतज्ञ– उपकार को मानने वाला, एहसान मानने वाला, एहसानमंद।
- कृतघ्न– उपकार को न मानने वाला, एहसान न मानने वाला, एहसानफरामोश।
- कृत्रिम– नकली, बनावटी, छद्म, मानव निर्मित।
- कौतिगहार– तमाशबीन, कौतुक देखने वाला।
- खटका– डर, भय, आशंका, चिंता, फिक्र।
- खफा–नाराज, अप्रसन्न, क्रुद्ध, रूष्ट।
- खबर– समाचार, वृतांत, हाल।
- खबरदार– होशियार, सजग, सावधान।
- खबरनवीस– समाचार लेखक।
- खल– बुरा, नीच, अधम, पापी, क्रूर, दुर्जन, दुष्ट।
- खरा– मिलावट रहित, विशुद्ध, बढ़िया, करारा, खालिस।
- खाकसार– नाचीज, अकिंचन, तुच्छ।
- खातिर– आदर, सम्मान, के लिए।
- खामी– कमी, त्रुटि, दोष, कच्चापन।
- खालसा– सरकारी, राजकीय।
- खारिज– बाहर किया हुआ, निकाला हुआ,बहिष्कृत, रद्द किया हुआ, जिस अभियोग पर सुनवाई से इनकार किया गया हो।
- खाविंद– पति, मालिक,स्वामी।
- खासियत– स्वभाव, प्रकृति, आदत, गुण।
- खिताब– पदवी, उपाधि।

- खिदमत– सेवा।
- खिराज– राजस्व, कर।
- खिलाफ– विरुद्ध, उलटा, विपरीत।
- खुदगर्जी– स्वार्थपरता, मतलब।
- खुदमुख्तार– जिस पर किसी का दबाव न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, आजाद।
- खुदी– अहंकार, अभिमान, शेखी, घमंड।
- खुफिया– गुप्त, पोशीदा, छिपा हुआ।
- खुमार– मद, नशा।
- खुशमिजाज– सदा प्रसन्न रहने वाला, हँसमुख।
- खूबसूरत– सुंदर, रूपवान।
- खैरख्वाह– भला चाहने वाला, शुभचिंतक।

मिशन गोरखपुरी 100

- खैरियत– कुशल–क्षेम, राजीखुशी, भलाई, कल्याण।
- गनीमत– संतोष की बात।
- गफलत– असावधानी, लापरवाही, बेखबरी, भूल, चूक, चेतना का अभाव।
- गाम्भीर्य– गंभीरता, गहराई, स्थिरता, गहनता, गूढ़ता।
- गिरा– वाणी, जीभ,जबान, जिह्वा, वचन, कलाम।
- गिला– शिकायत,उलाहना।
- गुलजार– बाग, हराभरा, आनंद और शोभायुक्त, रौनक।
- गुस्ताख– बड़ों का संकोच न रखने वाला, ढीठ, अशालीन, अशिष्ट, बेअदब, असभ्य, बेगैरत, बेमुरव्वत।
- गुस्ताखी–धृष्टता, ढिठाई, अशिष्टता, बेअदबी।
- गैरत– लज्जा, हया, शर्म।
- गैरमुनासिब, गैरवाजिब– अनुचित, अयोग्य।
- गौरव– बड़ुपन, महत्त्व, सम्मान, गरिमा, उत्कर्ष।
- चहारदीवारी– (फारसी शब्द) किसी स्थान के चारों तरफ की दीवार, प्राचीर।
- छवि– शोभा, सौंदर्य,कांति, प्रभा।
- जूस्तजू– तलाश, खोज, आरजू।
- ठेठ– निपट, बिलकुल, निरा, निर्लिप्त, निर्मल, शुरू, आरंभ।
- ढंग– प्रणाली, शैली, ढब, रीति, प्रकार, तरह, किस्म, युक्ति, रचना, बनावट, गढ़न, उपाय, उचित रास्ता।
- ढाढ़स– धैर्य, आश्वासन, तसल्ली, दृढ़ता, साहस, हिम्मत।
- ढिठाई– धृष्टता, गुस्ताखी, निर्लज्जता, अनुचित साहस।
- तकरार– हुज्जत, विवाद, झगड़ा, टंटा।

- तकरीर– भाषण, बहस, दलील, जिरह, बातचीत।
- तकलीफ– कष्ट, क्लेश, दुःख, विपत्ति, मुसीबत।
- तकल्लुफ–केवल शिष्टाचारवश कष्ट उठाकर कोई काम करना, शिष्टाचार,औपचारिक काम।
- तजवीज– सम्मति, राय, फैसला, निर्णय, ख्याल, अनुमान, विचार।
- तत्पर– उद्यत, तैयार, मुस्तैद, सन्नद्ध।
- तत्त्वावधान– जाँच–पड़ताल, देखरेख, निरीक्षण।
- तद्रूप(तत्‌रूप)– समान, सदृश, उसी रूप का।
- तन्मय– जो किसी काम में बहुत मग्न हो, लवलीन, दत्तचित्त, एकाग्रचित्त।
- तफसील– विस्तार, विस्तृत वर्णन, टीका, तशरीह, कैफियत, ब्यौरा।
- तरजुमा–अनुवाद, भाषान्तर, उल्था।
- तरजीह– किसी को अन्य से अच्छा समझना या प्रधानता देना।
- तस्कीन– तसल्ली, सांत्वना।
- तसदीक– सचाई की परीक्षा या निश्चय, प्रमाणों के माध्यम से पुष्टि करना, समर्थन, साक्ष्य, गवाही, सचाई।
- तहकीकात– किसी घटना की ठीक–ठाक बातों की खोज, अनुसंधान, जाँच, पड़ताल, छानबीन।
- तहजीब– सभ्यता, शिष्टता।
- ताजीरात– दंड संबंधी कानूनों का संग्रह।
- तानाशाही– अधिकारों का मनमाना प्रयोग, स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता, अधिनायकतंत्र।
- तामील– पालन, पालना के लिए पाबंद करना।
- तारीफ– बखान, प्रशंसा, श्लाघा, बड़ाई, गुण, विशेषता।
- तालीम– शिक्षा, उपदेश, अभ्यास।
- तासीर– असर, प्रभाव।
- तीमारदारी– रोगियों की सेवा, परिचर्या।

- तैनात– नियत, नियुक्त, मुकर्रर।
- त्वरित– जल्दी से, वेगपूर्वक।
- दत्तक– औरस संतान के अभाव में शास्त्रीय विधि से स्वीकार किया गया पुत्र।
- दस्तूर– नियम, कायदा, रीत, रिवाज, रस्म, प्रथा।
- दावा– हक, अधिकार, जोर, दबाव, अभियोग।
- दास्तान– वृत्तांत, हाल, कथा, किस्सा।
- दीप्ति– प्रकाश, उजाला, रोशनी, प्रभा, आभा, चमक, द्युति, कांति, शोभा, छवि।
- नियामक– नियम तय करने वाला,व्यवस्था या विधान करने वाला, नियंत्रण करने वाला।
- निष्ठुर– क्रूर, बेरहम, कड़ा, कठिन, सख्त।
- निष्णात– विज्ञ, कुशल, प्रवीण, दक्ष, निपुण, माहिर, उस्ताद।
- मकतूल–पीड़ित।
- निस्संदेह– अवश्य, जरूर, बेशक, जिसमें कोई सन्देह न हो।
- निहित– विद्यमान, स्थापित, रखा हुआ, शामिल।
- नुमाइश– प्रदर्शन, दिखावा।
- नुमाइंदा– प्रतिनिधि, डेलीगेट।
- नैतिक– नीति संबंधी।
- नैसर्गिक– प्राकृतिक, कुदरती, स्वाभाविक।
- पक्ष– पार्श्व, तरफ, मत, प्रवृत्ति, पहलू, सिद्धांत।
- परस्पर– आपस में, एक–दूसरे के साथ, आपसी।
- पराकाष्ठा– सीमांत, चरम सीमा, हद, अंत।
- परिष्कार– सफाई, स्वच्छता, निर्मलता, शोभा, सजावट।
- पुनरुत्थान– फिर से उठना, पतन के बाद फिर से उठना, उन्नति करना।
- पुलिंदा– कागज या कपड़े की गड्डी, बंडल, गट्ठर।
- परामर्श– सलाह, मंत्रणा, युक्ति, विवेचन, विचार, मशविरा।
- प्रखर– तेज, तीखा, तीक्ष्ण, प्रचंड, धारदार, पैना।
- कोमलता– सुकुमारता, नजाकत।
- नजीर– उदाहरण, मिसाल, दृष्टांत, नमूना, प्रतिबिंब, प्रतिमान।
- प्रगल्भ– आत्मविश्वास से पूर्ण, अभिमानी,साहसी, प्रत्युपन्न मतिवाला, हाजिरजवाब, चतुर,
- होशियार, प्रतिभाशाली, निर्भय।
- प्रज्ञा– अंतर्दृष्टि, ज्ञान, एकाग्रता, बुद्धि, मेधा, समझ।
- प्रयोजन– काम, कार्य, अर्थ, उद्देश्य, अभिप्राय, मतलब, आशय, उपयोग, व्यवहार।
- फजल– अनुग्रह, कृपा, दया, अनुकंपा,रहम।
- फरिश्ता– देवदूत।
- सूची– फेहरिस्त, लिस्ट।
- बख्शिश– दान, उदारता, क्षमा।
- मुनासिब– उचित, सही।
- भावप्रवण– भावुक।
- भीरू– डरपोक, कायर।
- शगल– शौक, चाव, रुचि।
- जनसंख्या– मर्दुमशुमारी, आबादी।
- मशक्कत– मेहनत, श्रम, परिश्रम।
- मशहूर– प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात।

- माकूल–उचित, वाजिब, ठीक, लायक, योग्य, अच्छा, बढ़िया।
- मातहत– अधीनस्थ।
- माहात्म्य– महिमा,गौरव, बड़ाई, आदर, मान।
- मिजाज– स्वभाव, तासीर, प्रवृत्ति, तबियत, दिल, शरीर या मन की दशा।
- मुगालता– धोखा, कपट, छल।
- रियाया– जनता, प्रजा।
- अंकुश– प्रतिबंध, शासन, दबाव, रोक।
- पुरजोर– ओजपूर्ण, जोरदार।
- लजीज– स्वादिष्ट।
- अदब– शिष्टाचार, सभ्यता।
- अप्रितम– सुंदर, अद्‌भुत।
- अपरिमित– बहुत अधिक, अथाह।
- सरोकार– परस्पर सम्बंध, लगाव, वास्ता।
- सहिष्णुता– सहनशीलता।
- शालीन– विनीत, नम्र, लज्जाशील।
- बेइंतहा– बहुत अधिक।
- बेकरार– व्याकुल, व्यग्र।
- अदीब– लेखक।
- वकार– गरिमा।
- जमाल– सौंदर्य।
- मुहिम– कठिन काम, बड़ा काम।
- प्रदत्त– प्रदान किया हुआ, दिया हुआ।
- अमूमन– अधिकतर, अधिकांश, लगभग।

———————

मिशन बोर्डपारी 100

शेखावाटी मिशन – 100

मार्गदर्शक एवं प्रेरणा स्रोतः–

डॉ. महेन्द्र कुमार
सेवा निवृत संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री सुरेन्द्र सिंह गौड़
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री घनश्याम जाट
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुंझुनू

श्री संपतराम बारूपाल
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
चूरू

संभाग स्तरीय परीक्षा परिणाम उन्नयन समिति

श्री ओम प्रकाश फगेड़िया
अति. जि.शि.अ. कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्रीमति बबीता ढ़ाका
सहायक निदेशक
कार्यालय मुख्य जि.शि. अधिकारी
झुंझुनू

श्री राकेश कुमार तेतरवाल
सहायक निदेशक
कार्यालय मुख्य जि.शि. अधिकारी
सीकर

श्री नरेश बिस्सु
सहायक निदेशक
कार्यालय मुख्य जि.शि. अधिकारी
चूरू

संकलन, सहयोग एवं सुझावः–

श्री महेद्रसिंह बड़सरा
अति. जि.शि.अ. कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री अमर सिंह
जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)
माध्यमिक शिक्षा, झुंझुनू

श्री मुकेश कुमार मेहता
जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)
माध्यमिक शिक्षा, सीकर

श्री रमेश पुनियाँ
अति. जिला परियोजना समन्वयक,
समसा, चूरू

श्री रिछपाल सिंह
अति. जिला परियोजना समन्वयक,
समसा, सीकर

श्री सुभाष चन्द्र मीणा
अति. जिला परियोजना समन्वयक,
समसा, झुंझुनू

श्री सांवरमल गहनोलिया
शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी, चूरू

श्री हरदयालसिंह
शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी, सीकर

श्री कमलेश तेतरवाल
शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी,झुंझुनू

श्री महेन्द्र सारण, प्रधानाचार्य
राउमावि भोजाण राजगढ चूरू

श्री त्रिलोक चन्द्र, वरिष्ठ अध्यापक
राउमावि, आबसर, चूरू

श्री शिशुपाल छिरंग, प्र..अ.
राबाउप्रावि नाकरासर, चूरू

श्री प्रमोद कुमार सैनी
कनिष्ठ सहायक
समसा, चूरू

श्री पुरूषोतम मीणा, सप्रअ
कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री रूकमानन्द, वरिष्ठ सहायक
कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

संरक्षक

श्री रामकरण फगेड़िया
सेवा निवृत प्रधानाचार्य

श्री मुकन्दाराम नेहरा
सेवा निवृत प्रधानाचार्य

कार्यालय :– संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राजस्थान)

राज्य में प्रतियोगी परीक्षाओं का सिरमौर संस्थान...
पूर्णतया नये बैच प्रारम्भ
REET
पटवार
पुलिस
SSC
BANK
प्र
या
स
मार्ग दर्शन
9461536226
9413069632
9414773943
राज्य में प्रतियोगी परीक्षाओं का सिरमौर संस्थान...
प्रयास
कैरियर इंस्टीटयूट
नवलगढ़ रोड़, सीकर
7728027533